YouTube Subscribe Amar Bhaskar News X @amarbhashkarnews Amar bhashkar

हिन्दी दैनिक

अमर भास्कर

ज़िद सच की

उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, झारखंड, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं उत्तराखंड में प्रसारित

औरेया में सीएम योगी ने कांग्रेस-सपा को जमकर ०1

Email- amarbhashkar21@gmail.com, www.amarbhashkar.in

चुनाव प्रचार को लेकर अखिलेश यादव ने बनाई रणनीति.०2

वर्ष: ०1 अंक: 291 | बदायूं, रविवार 28 अप्रैल 2०24 | पृष्ठ- ०6 | मूल्य- 4.०० रूपये

सुनीता केजरीवाल ने किया रोड शो, बोलीं- तानाशाही के खिलाफ वोट करें

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव को लेकर राजनेता प्रचार के लिए मैदान में उतरे हुए हैं। दिल्ली में भी प्रचार जोरों पर है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली में मेगा रोड शो निकाला। जिसके बाद उनकी राजनीति में एंट्री हो गई है। यह उनका पहला रोड शो है।

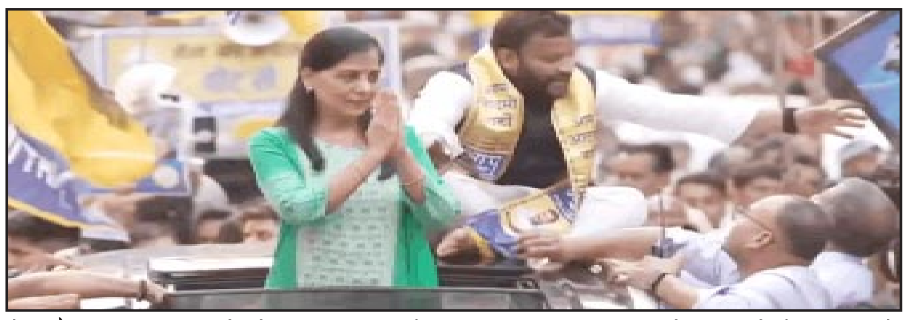

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने पूर्वी दिल्ली से आप के लोकसभा उम्मीदवार कुलदीप कुमार के समर्थन में कोंडली इलाके में रोड शो किया। मिली जानकारी के मुताबिक, कोंडली इलाके में रोड शो से पहले आई लव केजरीवाल और जेल का जवाब वोट से के पोस्टर लगाए गए हैं।

सुनीता केजरीवाल ने रोड शो के दौरान कहा कि ये देश तानाशाही की ओर जा रहा है। इस देश को बचा लीजिए। 25 मई को वोटिंग का दिन है। आप लोग वोट देने जाएंगे। उस दिन तानाशाही के खिलाफवोट दें। जय हिंद.. उन्होंने जेल का जवाब वोट से का नारा भी लगाया।

मंत्री आतिशी ने बीते दिन प्रेसवार्ता में बताया कि वे पहली बार आप के चुनावी कार्यक्रम का नेतृत्व कर रही हैं। अभी तक ऐसे कार्यक्रम के प्रमुख मुख्यमंत्री केजरीवाल हुआ करते थे। उनके जेल जाने के बाद इस कमी को दूर करने के लिए सुनीता चुनावी मैदान में हैं।

सुनीता केजरीवाल के रोड शो से पहले दिल्ली मंत्री गोपाल राय ने कहा कि आज से शुरुआत हो रही है। हम लोग रोड शो के जरिए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का मैसेज जनता तक पहुंचाएंगे।

आज रविवार को पश्चिमी दिल्ली में जनता से केजरीवाल के लिए समर्थन मांगेगी। वे दिल्ली के अलावा पंजाब, गुजरात और हरियाणा में भी आप प्रत्याशियों के लिए प्रचार करेंगी। मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के बाद से दिल्ली में भाजपा के लिए अलग माहौल बन गया है। लोग पूछ रहे हैं कि मुख्यमंत्री को क्यों गिरफ्तार किया गया। हर कोई इस गिरफ्तारी के खिलाफहै। दिल्ली-पंजाब की जनता केजरीवाल के साथ खड़ी है।

आतिशी ने कहा कि लोकसभा चुनाव की घोषणा के तुरंत बाद केंद्र सरकार ने ईडी की मदद से मुख्यमंत्री को गिरफ्तार कर लिया। भाजपा ने चुनाव में हार के डर के कारण ये कार्रवाई की। भाजपा नहीं चाहती थी कि केजरीवाल चुनावी मैदान में उतरें, लेकिन मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के बाद भाजपा को नुकसान हुआ है। दिल्ली-पंजाब के साथ दूसरे हिस्सों में जनता मुख्यमंत्री के समर्थन में आई है।रोड शो के दौरान सुनीता के साथ स्थानीय विधायक भी प्रचार करेंगे। रोड शो जिस विधानसभा क्षेत्र से निकलेगा, उसमें स्थानीय विधायक सहित अन्य नेता शामिल होंगे। रोड शो के माध्यम से पार्टी जनता के सामने अपनी बात रखेगी।

एक बार फिर चोटिल हुईं बंगाल की सीएम, हेलीकॉप्टर में चढ़ते वक्त फिसला पैर

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण के मतदान के दूसरे दिन ही पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार फिर चोटिल हो गईं। दुर्गापुर में हेलीकॉप्टर पर चढ़ते वक्त उनका पैर फिसल गया। उन्हें फिलहाल आसनसोल ले जाया गया है। इस घटना से जुड़ी एक वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि हेलीकॉप्टर में चढ़ते वक्त उनका पैर फिसल गया और वह गिर गईं। वहां मौजूद सुरक्षाकर्मी उन्हें उठाने के लिए भागे। गिरने के कारण ममता को मामूली चोटें आई है।

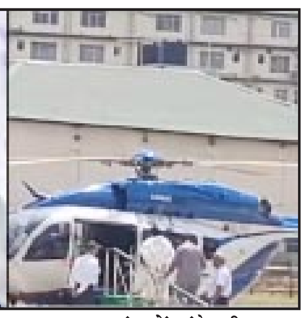

ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, इससे पहले भी ममता कई बार चोटिल हो चुकी हैं। हाल ही में ममता को उनके आवास पर चोट लगी थी। परिसर में टहलने के दौरान वह गिर गई थी, जिससे उनके सिर पर गंभीर चोट लगी थी। उन्हें तुरंत इलाज के लिए एसएसकेएम अस्पताल ले जाया गया था, जहां उन्हें टांके भी लगाए गए थे। इससे पहले 2021 में चुनाव प्रचार के दौरान नंदीग्राम में उन्हें कुछ लोगों ने धक्का दिया था, जिससे उनके पैर में चोट लगी थी। रेयापारा में एक मंदिर के बाहर हुई इस घटना को उन्होंने साजिश का हिस्सा बताया था।

एक नजर

मशहूर वकील उज्ज्वल निकम बने मुंबई नॉर्थ सेंट्रल से भाजपा प्रत्याशी

मुबंई। लोकसभा चुनाव के बीच एक बड़ी खबर सामने आई है। भाजपा ने मुंबई नॉर्थ सेंट्रल सीट से पूनम महाजन का टिकट काटा है और उज्ज्वल निकम को प्रत्याशी घोषित किया है। बता दें कि अजमल कसाब केस में उज्ज्वल निकम सरकारी वकील थे और उन्होंने ही कसाब को फांसी की सजा दिलवाई थी। निकम ने 26द11 हमले के अलावा मुंबई बम ब्लास्ट केस, गुलशन कुमार मर्डर केस, प्रमोद महाजन मर्डर केस, गेटवे ऑफ इंडिया ब्लास्ट जैसे कई केस लड़े हैं। महाराष्ट्र के जलगांव शहर के एक मराठा परिवार से ताल्लुक रखने वाले मशहूर वकील निकम को अब भाजपा ने मुंबई नॉर्थ सेंट्रल सीट से उम्मीदवार घोषित किया है। बता दें कि मुंबई नॉर्थ सेंट्रल से दिवंगत भाजपा नेता प्रमोद महाजन की बेटी पूनम महाजन ने 2०14 और 2०19 में जीत हासिल की थी। वह भाजपा की युवा शाखा की पूर्व अध्यक्ष भी हैं। भाजपा के नेताओं ने दावा किया है।

सीएम योगी बोले: पहले की सरकार आतंकवादियों को बिरयानी खिलाती थी, अब देश में पटाखा भी फूटने पर पाकिस्तान देता सफाई

कानपुर। औरैया जिले में अजीतमल के जनता इंटर कॉलेज में शनिवार को जनसभा को संबोधित करने पहुंचे योगी आदित्यनाथ के 28 मिनट के भाषण ने खूब सियासी पारा चढ़ाया। भाषण के पहले चरण में जहां मोदी सरकार के कार्यकाल में हुए जनहितकारी कामों को बताया तो दूसरे चरण में विपक्ष पर खूब बरसे।

सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश की सभी 8० लोकसभा सीटों पर भाजपा की जीत तय होने का दावा किया। इसके बाद जनता को संबोधित करते हुए कहा कि पहले की सरकार आतंकवादियों को बिरयानी खिलाती थीं। अब देश में कोई भी पटाखा फूटता है तो पाकिस्तान सामने आकर सफाई देता है कि मेरा हाथ नहीं है। मोदी सरकार की कार्यशैली को इसी से जाना जा सकता है। आचरण के पैमाने को लेकर कहा कि बाबू कल्यान सिंह के देहांत पर सांत्वना देने से कतराने वाले सपाई माफियाओं के जनाजे में शोक दिखाने पहुंचे हैं।

भाजपाई सपा सुप्रीमो मुलायम सिंह के देहांत होने पर भी पहुंचे थे। कांग्रेस आपकी विरासत में नजर डाल रही है। जिसे छीनने का प्रयास करेगी। पिछड़ी जातियों का आरक्षण मुसलमानों को देने का प्रयास भी करेगी। वहीं धार्मिक मुद्दे को लेकर अयोध्या व काशी के बाद अब पश्चिम की ओर मथुरा को लेकर संकेत किया। कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि यह वही लोग है जो हमारे ईष्ट देवताओं के अस्तित्व पर सवाल खड़े करते थे। योगी के भाषण के दौरान जय श्रीराम के नारे लगते रहे। वहीं उनकी दस्तक के दौरान शेर आया... शेर आया. का शोर होता रहा। वहीं प्रत्याशी डॉ. राम शंकर कठेरिया को लेकर दोबारा टिकट मिलने पर जनता से जीत का रास्ता साफ करने की अपील भी की।

ईडी के हलफनामे पर केजरीवाल का जवाब, एजेंसी पर लगाए मनमानी के आरोप

दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सुप्रीम कोर्ट में प्रवर्तन निदेशालय के हलफनामे का जवाब दिया। इसके साथ ही उन्होंने प्रवर्तन निदेशालय पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के कार्यक्रम की घोषणा और आदर्श आचार संहिता लागू होने से ठीक पहले उन्हें जिस तरीके से गिरफ्तार किया गया, वह तरीका ईडी की मनमानी के बारे में बहुत कुछ बताता है। शीर्ष अदालत में जवाब देते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री ने कहा कि इस बात का कोई सबूत मौजूद नहीं है कि आम आदमी पार्टी ने दक्षिण के किसी समूह से फंड या रिश्वत ली हो। उन्होंने आगे कहा कि गोवा के चुनाव अभियान में इस धन का उपयोग करना दूर की बात है। अरविंद केजरीवाल ने अपने हलफनामे में लिखा है कि आम आदमी पार्टी के पास एक भी रुपया नहीं आया और उन पर बिना किसी ठोस सबूत के आरोप लगाए गए हैं। दिल्ली के सीएम ने कहा कि उन पर लगाए गए आरोप आधारहीन हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने अरविंद केजरीवाल को दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। इसके बाद उन्हें एक अप्रैल से न्यायिक हिरासत में लिया गया। बीते दिनों कोर्ट ने उनकी न्यायिक हिरासत सात मई तक बढ़ा दी थी। केजरीवाल की ही पार्टी के मनीष सिसोदिया भी दिल्ली शराब घोटाला केस में करीब डेढ़ साल से तिहाड़ जेल में बंद हैं।

पूर्व सांसद धनंजय सिंह को बड़ी राहत

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने दी जमानत, बरकरार रहेगी सात साल की सजा

अमर भास्कर, ब्यूरो

प्रयागराज। पूर्व सांसद और बाहुबली धनंजय सिंह को शनिवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बड़ी राहत दी है। कोर्ट से उन्हें जमानत मिल गई है। हालांकि हाईकोर्ट ने सात साल की सजा को बरकरार रखा है। वो अभी चुनाव नहीं लड़ सकेंगे।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने जौनपुर के पूर्व सांसद धनंजय सिंह को जमानत दे दी। साथ ही सजा को रद्द करने की मांग कोर्ट ने खारिज कर दी है। ऐसे में वह अब सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा सकते हैं। जस्टिस संजय कुमार सिंह की बेंच ने पूर्व सांसद धनंजय सिंह को जमानत दी है।

आपको बता दें कि वादी अभिनव सिंघल ने 1० मई 2०2० को लाइन बाजार थाने में पूर्व सांसद धनंजय सिंह समेत दो के खिलाफ अपहरण और रंगदारी की प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसके बाद पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया था। इस मामले में वो तीन माह जिला कारागार में बंद रहे। इसके बाद पूर्व सांसद धनंजय सिंह की जमानत हुई। मामले में पुलिस ने विवेचना करके तीन माह के अंदर कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल कर दिया।

जौनपुर की एमपी/एमएलए कोर्ट ने दो अप्रैल 2०22 को धनंजय और सहयोगी पर आरोप तय किए थे। इसके बाद 13० तारीखों की सुनवाई के बाद पांच मार्च 2०23 को धनंजय समेत दो को दोषी पाया गया। इसके बाद छह मार्च 2०24 को सात साल की सजा और 5० हजार रुपये का जुर्माना लगाया था। गौरतलब है कि पूर्व सांसद धनंजय सिंह ने जौनपुर की विशेष अदालत से मिली सात साल की सजा के खिलाफ पिछले महीने हाईकोर्ट में अपील दाखिल कर अंतिम फैसला आने तक सजा पर रोक लगाए जाने और जमानत पर जेल से रिहा किए जाने की मांग की थी। धनंजय सिंह की अर्जी पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में चली सुनवाई गुरुवार को पूरी हो गई थी।

मामले की सुनवाई कर रही न्यायमूर्ति संजय कुमार सिंह की एकल पीठ ने सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। शनिवार को अदालत ने फैसला सुनाया। अब शनिवार को हाईकोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए उन्हें जमानत दे दी, हालांकि कोर्ट ने उनकी सजा पर लगाने से इनकार कर दिया, ऐसे में सात साल की सजा बरकरार रहेगी। हाईकोर्ट से जमानत मिलने के बाद भी धनंजय चुनाव नहीं लड़ पाएंगे।

आप नेता गोपाल राय बोले- वोट से तानाशाही को खत्म करेंगे दिल्लीवासी

दिल्ली। सरकार में मंत्री गोपाल राय ने कहा, आप का चुनाव प्रचार जिस तेजी के साथ आगे बढ़ रहा है उससे भाजपा डरी हुई है। लेकिन ये चुनाव इस बार आप नहीं लड़ रही है बल्कि दिल्ली की जनता लड़ रही है। दिल्ली के लोगों ने अपने वोट से चुनकर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को अपना समर्थन दिया था। जिस तरह का तानाशाहीपूर्ण रवैया अपनाते हुए उन्हें गिरफ्तार किया गया, दिल्ली के लोग तैयार हो रहे हैं इस तानाशाही का जवाब देने के लिए। भाजपा ने जिस तरह से तानाशाही की है, दिल्ली के लोग अपने वोट से इस तानाशाही को खत्म करेंगे।

उधर, अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ आप कार्यकर्ताओं ने श्जेल का जवाब वोट सेश् अभियान चलाया। पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट से पार्टी के उम्मीदवार कुलदीप कुमार ने कहा, श्जिन्होंने दिल्लीवासियों को सर्वश्रेष्ठ स्कूल और मुफ्त बिजली देने का काम किया, ऐसे मुख्यमंत्री को भाजपा ने झूठे मामले में जेल में डाल दिया है। आज से सुनीता केजरीवाल का रोड शो शुरू होगा। वह इस सरकार के खिलाफलड़ने के लिए दिल्ली की जनता से समर्थन और आशीर्वाद मांगने जा रही हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर हमला बोलते हुए कहा, कोई सरकारी कर्मचारी अगर किसी भी आरोप में पकड़ा जाता है तो 48 घंटे के अंदर उसका इस्तीफा ले लिया जाता है। अरविंद केजरीवाल, आप तो सरकार चलाने वाले मुख्यमंत्री हैं। आपको शर्म आनी चाहिए थी। अब तक आपको इस्तीफा दे देना चाहिए था लेकिन कुर्सी का मोह, उस बंगले का मोह जो आपने जनता के पैसों से बनाया वो आपको ये पद छोड़ने नहीं दे रहा।

गुजरात के पोरबंदर में अमित शाह ने की रैली

सूरत। लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान खत्म होने के दूसरे दिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुजरात में चुनाव प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने एक रैली को भी संबोधित किया। गृह मंत्री ने रैली को संबोधित करते हुए कहा कि अगर नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनते हैं तो वह देश से आतंकवार और नक्सलवाद को खत्म कर देंगे। वह भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्धव्यवस्था भी बनाएंगे। अमित शाह ने भाजपा उम्मीदवार मनसुख मंडाविया के समर्थन में पोरबंदर में रैली की। गृह मंत्री ने आगे कहा कि जब अनुच्छेद 37० हटाया गया, तब कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इसका विरोध किया था और कहा था कि इस कदम से कश्मीर में खून का नदियां बह जाएगी। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा अमित शाह ने कहा, पिछले पांच वर्षों में खून की नदी तो दूर, किसी ने वहां पत्थर फेंकने तक की हिम्मत नहीं की। पीएम मोदी ने देश से आतंकवाद और नक्सलवाद को खत्म करने का काम किया। जब मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री थे तब कोई भी पाकिस्तान से भारत में प्रवेश कर जाता था और यहां बम विस्फोट को अंजाम देता था।

अमर भास्कर

अमर भास्कर

आवश्यकता है-

अमर भास्कर

(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र एवं न्यूज चैनल)

को पूरे देश में प्रदेश स्तर, मण्डल स्तर जिला स्तर, तहसील स्तर, ब्लॉक एवं थाना स्तर पर अनुभवी एवं शिक्षित संवाददाता एवं विज्ञापन प्रभारियों की।

संपर्क करें:-

मोबा. 9411214614, 9058143211, 7599339198

ऑफिस:-

निकट होटल रिजेन्सी, लावेला चौक, बदायूँ (उ.प्र.)- 243601

www.amarbhashkar.com

Email- amarbhashkar21@gmail.com

चुनाव प्रचार को लेकर अखिलेश यादव ने बनाई रणनीति

अमर भास्कर ब्यूरो।

लखनऊ। लोकसभा चुनाव में आगरा और फतेहपुर सीकरी लोकसभा के प्रत्याशियों के समर्थन में अखिलेश यादव 29 अप्रैल को आगरा आएंगे। यहां वह अपने लिए भाग्यशाली रहे जीआईसी मैदान में चुनावी रैली करेंगे।

सोमवार अपराह्न 3 बजे होने वाली सपा की रैली में प्रियंका या राहुल गांधी शामिल हो सकते हैं। सपा के लिए आगरा भाग्यशाली रहा है। साल 1992 में समाजवादी पार्टी की स्थापना के बाद अगले ही साल 1993 में यहां राष्ट्रीय अधिवेशन किया, जिसके तुरंत बाद उनकी प्रदेश में सरकार बन गई।

साल 2003 में सपा ने फिर से जीआईसी मैदान पर राष्ट्रीय अधिवेशन किया, जिसके बाद फिर सरकार बनी। साल 2009 में आगरा में बैठक के बाद लोकसभा चुनाव में सपा ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

साल 2012 के विधानसभा चुनाव से पहले फिर से तारघर मैदान पर अधिवेशन किया गया, जिसके बाद सपा की प्रदेश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। कोठी मीना बाजार मैदान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैली के बाद अब समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव आगरा आएंगे। सपा शहर अध्यक्ष वाजिद निसार ने बताया कि 29 अप्रैल को दोपहर 3 बजे वह जीआईसी मैदान पर चुनावी रैली को संबोधित करेंगे।

उनके साथ सपा सांसद डिंपल यादव, राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन और इंडी गठबंधन के घटक कांग्रेस से राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के आने की संभावनाएं हैं। कांग्रेस का आधिकारिक कार्यक्रम जारी नहीं हुआ है। यह रविवार तक स्पष्ट होने की उम्मीद है। 29 सितंबर 1992 को स्थापित समाजवादी पार्टी आगरा लोकसभा पर अब तक दो बार खाता खोल पाई है।

साल 1999 और 2004 में समाजवादी पार्टी सिने स्टार राजबब्बर के ग्लैमर के चलते आगरा लोकसभा सीट जीत चुकी है। उसके बाद 20 साल से सपा के लिए आगरा में साइकिल दौड़ाना मुश्किल हो गया है। वर्ष 2009 में आगरा लोकसभा सीट सुरक्षित हो गई, जिसके बाद पार्टी प्रत्याशी तीसरे नंबर से आगे नहीं बढ़ सके हैं। वर्ष 1991 के राममंदिर आंदोलन में धुर विरोधी रहे पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव और कल्याण सिंह इसी जीआईसी मैदान पर जनवरी 2009 में एक दूसरे के गले लगे।

जन्मदिन के लड्डू खाने से बच्चे बीमार

लखनऊ। जिले के मेहंदीगंज इलाके में बच्चे की खुशी के अवसर पर बांटे गए लड्डू खाने से 15 से अधिक बच्चे बीमार हो गए हैं। जिन्हें गंभीर हालत में बलरामपुर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जहां डॉक्टरों द्वारा उनका उपचार किया जा रहा है। घटना शुक्रवार देर शाम की है।

बताया जा रहा है कि स्थानीय निवासी सहाना के घर में बच्ची का जन्म हुआ था जिसकी खुशी में सहाना ने बच्चों के बीच लड्डू का वितरण करवाया था। बताया जा रहा है कि लड्डू खाने के बाद बच्चों को उल्टी दस्त की शिकायत शुरू हो गई। बच्चों को देर रात गंभीर हालत में बलरामपुर अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने उनका उपचार शुरू कराया। डॉक्टरों का कहना है कि बच्चों की हालत खतरे से बाहर है।

संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता की मौत

अमर भास्कर ब्यूरो।

कासगंज। जिले के सहावर कस्बा के हंस नगर कॉलोनी में एक महिला का शव फंदा से लटका मिला। मृतका के भाई ने ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। हंस नगर कॉलोनी निवासी महिला अनीता का शव शनिवार की सुबह कुंदा से लटका मिला।

सूचना मलने की सूचना पर आस-पास के लोग मौके पर एकत्रित हो गए। महिला की मौत की सूचना किसी ने फोन कर पुलिस को दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंच गई। महिला की मौत की खबर सुनकर मायके पक्ष के लोग भी मौके पर पहुंच गए। पुलिस ने शव को कुंदा से उतरवाकर शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा दिया। मृतका के भाई मुकेश कुमार निवासी मुहम्मद पुर ने बताया कि ढाई वर्ष पूर्व बहन अनीता की शादी हंस नगर निवासी अनुज से की थी। उसका पति दिल्ली में निजी कंपनी में कार्य करता है। वह दो दिन पूर्व घर आया था।

उसका आरोप है कि दहेज की मांग को लेकर उसका पति अनुज और ससुराल वाले आए दिन बहन के साथ मारपीट करते थे। दहेज की मांग पूरी न होने पर उन्होंने बहन की हत्या कर दी। मामले में उसने पति व अन्य ससुरालीजनों को नामजद करते पुलिस को तहरीर दी है। एएसपी राजेश भारती ने बताया कि महिला की मौत के मामले में जांच की जा रही है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। फंदा लगाने से महिला अनीता की मौत हुई।

मृतका के भाई मुकेश ने बताया कि बहन की शादी लगभग ढाई वर्ष पूर्व हुई थी। उसका बेटा शेखर एक वर्ष है। महिला की मौत से एक वर्षीय पुत्र के सिर से मां का साया उठ गया। मायके पक्ष के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है।

साइबर ठगों को देते थे बैंक खाता

अमर भास्कर ब्यूरो।

एटा। जिले के थाना मारहरा क्षेत्र के गांव समसपुर निवासी दो साइबर आरोपियों को पकड़ा गया है। साइबर क्राइम टीम ने इनको कासगंज रोड स्थित जीटी रोड बाईपास पुल के नीचे से गिरफ्तार किया है। इन्होंने खुलासा किया है कि खाते खुलवाने वाले गिरोह का मास्टर माइंड अवागढ़ निवासी सोनू नेपाली है, जो इन लोगों को एक खाता खोलने के चार हजार रुपये देता था।

पकड़े गए संजय माथुर उर्फ संजू और कपिल माथुर निवासी गांव समसपुर थाना मारहरा के पास से 2 मोबाइल फोन, 3 सिम कार्ड मिले हैं। इनके द्वारा बेचे गए 12 बैंक खातों में 1 लाख 1 हजार 695 रुपये की धनराशि फ्रीज कराई गई है। वहीं गिरोह का मास्टर माइंड अभी गिरफ्त में नहीं आ सका है। उसको भी पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

यह गांव के लोगों को झांसे में लेकर उनका आधार कार्ड व सिम कार्ड ले लेते थे। उसके बाद बैंक में खाता खुलवाकर बेच देते थे। इसके लिए गिरोह के सदस्यों को चार हजार रुपये मिलते थे। इसमें से एक-दो हजार रुपये ये खाता खुलवाने वाले को देते थे। इन खातों का संचालन अन्य राज्यों से किया जाता था।

इनमें साइबर ठगी करके रुपये मंगवाए जाते थे। सीओ सदर अमित कुमार राय ने बताया कि भोले-भाले लोगों को लालच देकर मास्टर माइंड सोनू नेपाली झांसे में लेता था। पकड़े गए संजू उर्फ संजय माथुर और कपिल माथुर इन लोगों का बैंक में खाता खुलवाते थे। जिसके बाद इनके बैंक खाते की जानकारी अन्य राज्यों के साइबर ठगों को बेच देते थे। अपने महंगे शौक को पूरा करने के लिए ये आरोपी इस प्रकार की घटनाओं को अंजाम देते थे।

पकड़े गए आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि यह अपने व अन्य ग्रामीणों के बैंक खातों को राजस्थान के अलवर व हरियाणा के नूंह मेवात में बेचते थे। साइबर ठगी का एक मामला राजस्थान में दर्ज कराया गया था। वहां की पुलिस ने पड़ताल की तो देखा कि जिस खाते में धनराशि मंगाई गई, वो मारहरा थाना क्षेत्र के गांव समसपुर का था।

युवक पर लगा छेड़छाड़ का आरोप

एटा। जिले के थाना मिरहची क्षेत्र के अंतर्गत एक गांव में शुक्रवार की रात युवक अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए उसकी घर पहुंचा था। वो आया तो चुपके से था, लेकिन ग्रामीणों ने उसे देख लिया। प्रेमी ने घर में जैसे ही प्रवेश किया तभी लाइट चली गई। ग्रामीणों ने तुरंत ही बाहर से दरवाजा बंद कर दिया, जिससे वो भाग न सके।

ग्रामीणों की इस हरकत से प्रेमी के पसीने छूट गए। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने आरोपी युवक को हिरासत में लिया है। प्रेमी गांव की ही रहने वाला बताया जा रहा है। ग्रामीणों ने उसे पुलिस के आने तक बंधक बनाकर रखा। पुलिस के आने पर घर का दरवाजा खोला गया। पुलिस ने जब मामले में पूछताछ की तो नाबालिग प्रेमिका ने आरोप लगाया कि वह जबरन घर में घुस आया और छेड़खानी की है। वहीं प्रेमी कहना है कि प्रेमिका के बुलाने पर ही वह उसके घर गया था।

कार में जिंदा जले मां और मासूम बेटा

अमर भास्कर ब्यूरो।

कासगंज। पत्नी मीना और ढाई माह के बच्चे को खो चुका आशीष बदहवासी की स्थिति में था। उसके हाथ और पैर भी झुलस गए थे। पुलिस ने उसे जिला अस्पताल में भर्ती कराया। जहां उसका उपचार किया जा रहा है।

घटना के संबंध में बदहवासी के बीच आशीष ने बताया कि जैसे ही पोल से कार टकराई। उसके बाद पलक झपकते ही पहले धुआं सा उठा उसके साथ तेज आग की लपटें। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे, कैसे करे।

उसने पत्नी व बच्चे को बचाने की कोशिश की, लेकिन पलक झपकते ही आग की लपटें इतनी तेज उठीं कि कुछ भी नहीं कर पाया और सबकुछ खत्म हो गया। आशीष कभी रोता कभी फकता और बार-बार पत्नी और बच्चे के बारे में लोगों से पूछ रहा था। परिवार के लोग भी जिला अस्पताल पहुंच गए। परिवार के लोग उसे झूठी सांत्वना दे रहे थे कि सब ठीक है कुछ नहीं हुआ है।

लेकिन जो मंजर उसकी आंखों ने देखा उस मंजर के आगे किसी की सांत्वना उसके गले नहीं उतर रही थी और वह तड़प रहा था। आपको बता दें कि कासगंज के कैनाल रूट बाईपास पर बृहस्पतिवार की रात सड़क के संकेतक बोर्ड के पोल से टकराकर कार आग का गोला बन गई।

युवक को किसी तरह बचा लिया गया लेकिन पत्नी और मासूम की जलकर मौत हो गई। जली हुई कार से उनके केवल कंकाल ही बाहर निकल सके। दमकल कर्मियों ने जैसे-तैसे आग पर काबू पाया। हादसा कैनाल रूट बाईपास पर बृहस्पतिवार की रात तीन बजे भगवंतपुर गांव के पास हुआ। हादसे का शिकार आशीष कुमार यादव निवासी राफियाबाद थाना भमोरा बरेली अपनी पत्नी मीना और ढाई माह के बालक बाबू के साथ मथुरा दर्शन के लिए जा रहे थे।

रात करीब एक बजे अपने घर से निकले और सुबह करीब तीन बजे बाईपास पर सड़क संकेतक बोर्ड के पोल से उनकी कार बेकाबू होकर टकरा गई और तुरंत ही कार में आग लग गई। आशीष खुद गाड़ी चला रहा था, जबकि उसकी पत्नी व बच्चे पीछे की सीट पर बैठे हुए थे। टकराने के बाद एक ट्रक चालक की मदद से आशीष बाहर निकल पाया और देखते ही देखते कार आग का गोला बन गई। आशीष अपनी पत्नी और बच्चे को बचाने की कोशिश करता रहा।

मदद को छटपटाते रहे लोग, लेकिन कुछ न कर पाए

अमर भास्कर ब्यूरो।

कासगंज। जिले में बाइपास मार्ग पर कार कैसे अनियंत्रित हुई, कैसे पोल में टकराई यह गुत्थी अभी तक नहीं सुलझ सकी है। माना जा रहा है कि या तो कार चला रहे आशीष को झपकी लग गई या फिर तीव्र मोड़ अचानक दिखाई देने पर यह हादसा हुआ। जिस स्थान पर यह हादसा हुआ वहां तीव्र मोड़ है।

हादसे की वजह अभी तक पुलिस भी स्पष्ट नहीं कर सकी है। विस्तृत जांच के बाद ही हादसे की वजह की तस्वीर साफ होगी। आशीष ने भी बातचीत में हादसे के कारण में कुछ नहीं बताया है। कैनाल रूट बाईपास यातायात को तो आसान बना रहा है। लेकिन इस 18 किलोमीटर लंबे मार्ग में कई स्थानों पर मोड़ हैं। मोड़ के संकेतक भी लोक निर्माण विभाग के द्वारा लगवाए गए हैं, लेकिन बार बार मोड़ की स्थिति होने पर कई बार दुर्घटनाओं की आशंका बनी रहती है।

बाईपास पर पहले भी कई हादसे हुए हैं, लेकिन कार में आग लगने जैसा हादसा नहीं हुआ। अन्य दुर्घटनाओं में लापरवाही और तेज गति ही कारण रही है।

यातायात प्रभारी लक्ष्मण सिंह का कहना है कि बाईपास मार्ग पर पहले से ही संकेतक बोर्ड लगाए गए हैं। अक्सर वाहन चालकों की लापरवाही से ही हादसे होते हैं। एआरटीओ आरपी मिश्र का मानना है कि सीएनजी गाड़ी में गैस और पेट्रोल दोनों के टैंक रहते हैं। जैसे ही कोई टक्कर होती है तो सीएनजी और पेट्रोल दोनों में ऊर्जा पैदा होती है।

टैंकों में लीकेज होने पर आग की स्थिति बनती है। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में ही वैगनार कार में आग लगी होने की संभावना है। कार हादसे का शिकार हुए दंपत्ति का बड़ा बेटा साढ़े तीन वर्षीय राघव है जिसे आशीष अपने साथ लेकर नहीं आया था। वह घर पर ही रह गया था।

यदि राघव भी कार में होता तो उसकी जान को खतरा हो सकता था। परिवार के लोग इस बात को भी बार बार कह रहे थे। जिस सीएनजी लगी वैगनार कार से आशीष मथुरा दर्शन के लिए जा रहा था।

14 मई को ब्रिटेन रवाना होगी हॉकी टीम

अमर भास्कर, ब्यूरो

वाराणसी। हॉकी वाराणसी के अध्यक्ष डॉ. एके सिंह ने बताया कि ललित हॉकी की शुरुआत यूपी कॉलेज से की थी। ललित उपाध्याय लगातार दो ओलंपिक खेलने वाले वाराणसी के दूसरे खिलाड़ी हैं। इससे पहले मोहम्मद शाहिद ने तीन ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया था। ललित का यह लगातार दूसरा ओलंपिक है। इससे पहले ललित टोक्यो ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम के सदस्य थे। इसमें भारतीय टीम ने कांस्य पदक जीता था। उनसे प्रेरणा लेकर वाराणसी की महिला हॉकी टीम 21 वर्ष बाद यूपी चौंपियन बनी है। ललित सेंटर फारवर्ड पोजीशन से खेलते हैं।

दहेज की मांग पूरी न होने पर नहीं पहुंची बारात

अमर भास्कर ब्यूरो।

एटा। जिले के राजा के रामपुर थाना क्षेत्र में हाथों में मेंहदी लगाकर और सज-धज कर दुल्हन बैठी ही रह गई, लेकिन बरात नहीं आई। दहेज में 10 लाख रुपये और कार न मिलने से नाराज वर पक्ष ने बरात लाने से इन्कार कर दिया।

शादी के लिए किए गए सभी इंतजाम धरे के धरे रह गए। बाद में लड़की के पिता ने थाने में पहुंचकर पुलिस को सूचना दी और कार्रवाई की मांग की। ग्राम भगवानपुरा निवासी जोगिंदर सिंह की पुत्री चंचल राजपूत का विवाह थाना छिबरामऊ कन्नौज के ग्राम पिंडारी खेड़ा निवासी नितिन कुमार पुत्र सर्वेश कुमार के साथ 18 अप्रैल को तय था। लड़की पक्ष की ओर से विवाह की सभी तैयारियां कर ली गईं थीं। 18 अप्रैल को सुबह से ही लड़की पक्ष बरात का इंतजार कर रहा था।

पूरे गांव में उत्सव जैसा माहौल था। लेकिन इसी बीच आए फोन कॉल ने सभी को चिंता में डाल दिया। यह फोन दहेज की मांग को लेकर था। वर पक्ष ने 10 लाख रुपये और कार की मांग रखी। जब लड़की के पिता ने इतना इंतजाम करने में असमर्थता जाहिर की तो वर पक्ष ने शादी से इन्कार कर दिया। दिन भर दोनों पक्षों के बीच बातचीत चलती रही। लेकिन वर पक्ष राजी नहीं हुआ और बरात नहीं आई। पूरे गांव में इस घटना को लेकर दुख और गुस्सा दिखाई दिया। लड़की के पिता ने रो-कर पुलिस से गुहार लगाई है और दहेज लोभी लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की।

जोगेंद्र सिंह ने बताया कि अपनी समर्थ के अनुसार शादी में होने वाले सभी कार्यक्रमों का पूरी इंतजाम कर लिया था। निर्धारित दिन हम लोग बरात का इंतजार कर रहे थे। थाना पुलिस का कहना है कि शिकायत आई है। पूरे मामले की जांच की जा रही है। आरोप सही पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

मुफ्त खाना लेना भारतीय छात्र को पड़ा महंगा, छह दिनों तक कमरे में रहा बंद

नई दिल्ली। सोशल मीडिया पर गलत जानकारियां अक्सर आग की तरह फैल जाती हैं और फिर उसका खामियाजा किसी न किसी को भुगतना पड़ता है। ऐसा ही कुछ एक भारतीय डाटा वैज्ञानिक के साथ हुआ। उन पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने कनाडाई फूड बैंकों से मुफ्त खाने का फायदा उठाया है।

हालांकि, बढ़ते विवाद के बीच अब पढ़ाई के लिए कनाडा गए भारतीय छात्र मेहुल प्रजापति ने सफाई दी है। उन्होंने दावा किया कि यह नस्ली हमला था। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे वह पिछले छह दिनों से एक कमरे में बंद थे। वह डर की वजह से बाहर नहीं निकल रहे थे।

विवाद की शुरुआत एक वीडियो से होती है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रजापति ने कनाडाई फूड बैंकों से मुफ्त खाने का फायदा उठाने को लेकर सोशल मीडिया पर एक वीडियो अपलोड किया था। वीडियो में प्रजापति ने बताया था कि वह हर महीने खाने और किराने के सामान में सैकड़ों रुपये बचाते हैं।

वीडियो में मेहुल ने बताया था कि वे कैसे हर महीने फूड और ग्रॉसरी में सैंकडों रुपये आसानी से बचा रहे हैं। उन्होंने वीडियो में बताया था कि ये ग्रॉसरी सभी छात्रों के लिए हैं। उन्होंने वीडियो में कहा था।

ट्रेन की एसी बोगी बनी स्वीमिंग पूल

अमर भास्कर ब्यूरो।

सिकंदराबाद। गोरखपुर एक्सप्रेस की एसी बोगी छत से टपकते पानी से स्वीमिंग पूल सी बन गई। यात्रियों की शिकायत पर समस्या दूर कराई गई। मामले में रेलकर्मी को चार्जशीट दी गई है। बीते दिनों गोरखपुर से आनंदविहार जा रही हमसफर एक्सप्रेस की एसी बोगी में छत से पानी टपकने का वीडियो वायरल होने से रेलवे की किरकिरी हुई थी।

अब नए मामले ने और फजीहत करा दी है। ट्रेन 12590 सिकंदराबाद-गोरखपुर एक्सप्रेस के थर्ड एसी की सीट 12, 23 पर सफर करने वालों ने रेलवे के सोशल मीडिया अकाउंट पर शिकायत दर्ज कराई कि पूरी बोगी में पानी भर गया है।

देखते ही देखते इसका वीडियो वायरल हो गया। पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लिया और तुरंत मरम्मत करवाई। पूर्वोत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने बताया कि पानी की पाइपों का कनेक्शन टूट गया था। इसके लिए जिम्मेदारी रेलकर्मी को चार्जशीट भी दी गई है। काठगोदाम से लखनऊ आ रही ट्रेन 15044 काठगोदाम-लखनऊ जंक्शन एक्सप्रेस की सेकेंड एसी बोगी ए-1 के शौचालय का नल खराब हो गया। इससे पूरी बोगी में पानी भर गया। यात्रियों की शिकायत पर समस्या दूर की गई।

धमाके के साथ आग का गोला बना ट्रांसफार्मर, बड़ा हादसा टला

अमर भास्कर ब्यूरो।

गोंडा। शहर के भीड़भाड़ वाले इलाके महराजगंज तिराहे पर रखे सचल ट्रांसफार्मर में शनिवार की सुबह ओवरलोडिंग के चलने अचानक आग लग गई। आग स्पार्किंग होने से लगी। देखते ही देखते ट्रॉली-ट्रांसफार्मर कुछ ही पल में आग का गोला बन गया। आग की लपटें देखकर भीड़ लग गई।

आग की सूचना पर चौकी प्रभारी महराजगंज ने पहुंचकर सबसे पहले बिजली सप्लाई कटवाई और दलकलकर्मियों को सूचना दी। आग की सूचना पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने कुछ ही देर में आग पर काबू पा लिया जिससे बड़ा हादसा टल गया।

तापमान बढ़ने के साथ ही बिजली की खपत में भी इजाफा हुआ है। गर्मी के कारण लोग बिना एयर कंडीशनर व कूलर के नहीं रह पा रहे हैं। एसी और कूलर के बिजली की मांग भी बढ़ गई है। ऐसे में ट्रांसफार्मर की क्षमता से अधिक लोड पड़ रहा है। शहर के महराजगंज तिराहे पर रखे सचल ट्रांसफार्मर में ओवरलोडिंग के चलते स्पार्किंग के कारण आग लगने से ट्रॉली-ट्रांसफार्मर धू-धूकर जलने लगा।

देखते गनीमत रही कि सुबह का समय होने की वजह से हवा का दबाव कम था, दोपहर में आग लगी होती तो तेज हवाओं के कारण आस-पड़ोस के मकान भी आग की चपेट में आ सकते थे। हालांकि, आग की सूचना पर पहुंचे मकलकर्मियों ने समय से आग पर काबू पा लिया। इससे आसपास के घरों तक आग की लपटे फैल नहीं पाईं। चौकी प्रभारी महराजगंज धीरेंद्र सिंह ने बताया कि आग की सूचना पर मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने समय से आग पर काबू पा लिया।

इससे बड़ा हादसा टल गया। महराजगंज चौराहे के समीप राजू गुप्ता के किराना की दुकान व मकान में एक साल पहले शार्ट सर्किट से आग लग गई थी जिसमें 50 लाख रुपये से अधिक का नुकसान हो चुका है। महराजगंज चौराहे पर रखे ट्रांसफार्मर से आसपास के घरों के लिए आग का खतरा बना रहता है।

मतदान समाप्ति समय पर लाइन में लगे सभी मतदाताओं को मिले वोट डालने का अवसर

अमर भास्कर, ब्यूरो

बदायूं। डायट स्थित ऑडिटोरियम में पीठासीन अधिकारियों व मतदान अधिकारियों के प्रशिक्षण सत्र में सामान्य प्रेक्षक के०के० सुदामा राव ने कहा कि निर्वाचन को निष्पक्ष, पारदर्शी, सकुशल, निर्विघ्न रूप से संपन्न कराना सुनिश्चित करें। जिला निर्वाचन अधिकारी मनोज कुमार ने कहा कि दिए गए दायित्वों का भली प्रकार अध्ययन कर आयोग की मंशा अनुरूप उसका निर्वहन भी करें। व्यय प्रेषक आर० कुमारन, पुलिस प्रेक्षक प्रियंका नरवरे भी मौजूद रहे।

सामान्य प्रेक्षक के०के० सुदामा राव ने कहा कि पीठासीन अधिकारी को यह जानकारी आवश्यक है कि बूथ के अंदर आयोग द्वारा किसको प्रवेश के लिए अनुमन्य किया गया है। उन्होंने कहा कि केवल वही व्यक्ति ही बूथ के अंदर प्रवेश करें यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि मतदान के दिन मतदान समाप्ति समय पर जो भी मतदाता लाइन में लगे हैं उन सभी का वोट अवश्य पड़े यह भी सुनिश्चित किया जाए।

जिला निर्वाचन अधिकारी मनोज कुमार ने कहा कि जनपद में आगामी ०7 मई 2०24 को मतदान है। पोलिंग पार्टियों ०6 मई को मंडी समिति से रवाना होगी तथा मतदान समाप्ति के बाद वापस वहीं पर ही आएंगे। उन्होंने बताया कि चुनाव से संबंधित विभिन्न तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनपद में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि 23 बदायूं संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में पांच विधानसभाएं आती हैं जिनमें से बदायूं, बिसौली, सहसवान, बिल्सी तथा जनपद संभल की गुन्नौर विधानसभा गुन्नौर आती है। उन्होंने बताया कि 23 संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में 1367 मतदान केंद्र व 2117 मतदेय स्थल है। उन्होंने बताया कि 23 बदायूं संसदीय क्षेत्र में 1०74637 पुरुष मतदाता, 933०66 महिला मतदाता तथा 111 अन्य मतदाता इस प्रकार कुल 2००7814 मतदाता हैं। उन्होंने कहा कि निर्वाचन एक स्वस्थ व पवित्र परंपरा है और आप उसमें भागीदार बन रहे हैं इसलिए आप एक भाग्यशाली हैं

मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक केशव कुमार ने कहा कि पोलिंग एजेंट उसी बूथ का या निकटवर्ती बूथ का या अपवाद की दिशा में उसी विधानसभा क्षेत्र का मतदाता होना चाहिए। उन्होंने बताया कि पोलिंग एजेंट की नियुक्ति प्रत्याशी अथवा उसके निर्वाचन एजेंट के नमूना हस्ताक्षर के आधार पर की जाती है। प्रत्येक प्रत्याशी को एक पोलिंग एजेंट तथा अधिकतम दो रिलीविंग एजेंट अनुमन्य हैं।

उन्होंने प्रशिक्षण सत्र में पीठासीन अधिकारियों व मतदान अधिकारियों को मतदान दिवस से एक दिन पूर्व व मतदान दिवस पर किए जाने वाले कार्यों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी तथा उनकी जिज्ञासाओं को शांत किया। उन्होंने पीठासीन अधिकारी की पांच रिपोर्ट व चार घोषणाओं पर भी विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर अधिकारी, कर्मचारी, पीठासीन एवं मतदान अधिकारी मौजूद रहे।

विवाहिता को बेल्ट से पीटा, विषाक्त पदार्थ खिलाने का आरोप, हालात गंभीर

अमर भास्कर, संवाददाता

बदायूं। जिले के सिविल लाइंस थाना क्षेत्र के गांव इकलहरी में विवाहिता की पिटाई का मामला सामने आया है। मायके वालों ने उसे गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। उनका आरोप है कि ससुराल वालों ने विवाहिता को बेल्ट से पीटा। इसके बाद उसे विषाक्त पदार्थ खिला दिया, जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। उन्होंने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

मूसाझाग थाना क्षेत्र के गांव गिधौल निवासी अनोज का कहना है कि उन्होंने अपनी बहन प्रीती की शादी करीब आठ साल पहले इकलहरी निवासी रवेंद्र के साथ की थी। उसके बाद से ससुराल वाले आए दिन दहेज की मांग को लेकर उसके साथ मारपीट कर रहे हैं। उसका उत्पीड़न करते हैं, जिससे उसकी बहन काफी परेशान थी। 26 अप्रैल को रात नौ बजे उसकी बहन ने कॉल करके बताया कि ससुराल वालों ने उसके साथ मारपीट की है। उसको पीटते-पीटते बेल्ट तक तोड़ दी, जिससे उसके शरीर पर काफी चोटें आई हैं।

उसने शनिवार सुबह मायके वालों को अपने घर बुलाया था। जब शनिवार सुबह मायके वाले इकलहरी गांव पहुंचे। तब तक ससुराल वाले वहां से भाग गए। आरोप है कि उसको विषाक्त पदार्थ भी दे दिया, जिससे प्रीती बेहोश हो गई। गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। भाई का कहना है कि उसने पुलिस को तहरीर दे दी है लेकिन अभी तक पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी।

सार-संक्षेप

प्रेक्षक ने डाक मतपत्र व ईडीसी मतदान कार्यों का किया निरीक्षण

बदायूं। डायट परिसर में बनाए गए फैसिलिटेशन सेंटर में निर्वाचन ड्यूटी में लगे कार्मिकों द्वारा डाक मतपत्र/इलैक्शन ड्यूटी सर्टीफिकेट (ईडीसी) के द्वारा किए जा रहे मतदान प्रक्रिया व कार्यों का निरीक्षण सामान्य प्रेक्षक केके सुदामा राव, व्यय प्रेक्षक आर० कुमारन, पुलिस प्रेक्षक प्रियंका नरवरे एवं जिला निर्वाचन अधिकारी मनोज कुमार ने किया।सामान्य प्रेक्षक ने की जा रही मतदान प्रक्रिया पर अपनी संतुष्टि व्यक्त करते हुए कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुरूप ही कार्य कराया जा रहा है। इस अवसर पर एसडीएम न्यायिक दातागंज विजय कुमार मिश्र, जिला कृषि अधिकारी दुर्गेश कुमार सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी रामजनम सहित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

पुलिस प्रेक्षक व डीईओ ने किया कंट्रोल रूम का निरीक्षण

बदायूं। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2०24 के लिए भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जनपद में भेजी गई पुलिस प्रेक्षक डॉ० प्रियंका नरवरे व जिला निर्वाचन अधिकारी मनोज कुमार ने शनिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में निर्वाचन के दृष्टिगत स्थापित कंट्रोल रूम का निरीक्षण कर वहां की गई व्यवस्थाओं का जायजा लिया व अधिकारियों व कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। पुलिस प्रेक्षक व जिला निर्वाचन अधिकारी ने उपस्थित कार्मिकों से कहा कि वह भारत निर्वाचन आयोग की मंशा अनुरूप कार्य करें। उन्होंने कहा कि प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापरक निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि सी-विज़िल एप के माध्यम से भी निर्वाचन संबंधी शिकायतों को प्राप्त कर उसका समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित कराया जा रहा है। इस अवसर पर अधिकारी व कर्मचारी आदि मौजूद रहे।

०2 मई तक निर्वाचन ड्यूटी में लगे कार्मिक मतदाता कर सकेंगे फैसिलिटेशन सेन्टर में मतदान

बदायूं। अपर जिलाधिकारी वित्त/उप जिला निर्वाचन अधिकारी वैभव शर्मा ने बताया कि लोक सभा सामान्य निर्वाचन-2०24 के परिपेक्ष्य में आयोग के निर्देशानुसार ऐसे मतदान कार्मिक जो मतदान ड्यूटी में लगे हैं और जिनका नाम 23-बदायूँ लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता सूची में सम्मिलित है, ऐसे कार्मिको हेतु विधानसभावार पोस्टल बैलेट फैसिलिटेशन सेन्टर जनपद बदायूँ में निर्धारित कार्मिक प्रशिक्षण स्थल पर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान परिसर (डायट) बदायूँ में स्थापित किये गये है। इन फैसिलिटेशन सेन्टर पर अर्ह मतदान कार्मिक दिनांक 24 अप्रैल से ०2 मई 2०24 के मध्य समय प्रात: 1०.०० बजे से सांय 6.०० बजे तक पोस्टल बैलेट के माध्यम से मतदान कर सकते हैं।

हज यात्रियों हेतु प्रशिक्षण एवं टीकाकरण कार्यक्रम हुआ निर्धारित

बदायूं। ज़िला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मौ० ख़ालिद ने जानकारी दी है कि हज कमेटी ऑफइण्डिया मुम्बई द्वारा हज प्रशिक्षण/टीकाकरण कार्यक्रम दिनांक 2०.०4.2०24 से 3०.०4.2०24 तक कराये जाने के निर्देश प्राप्त हुए है। उक्त के क्रम में जनपद के समस्त हज यात्रियों को सूचित किया जाता है कि हज-2०24 हेतु हज यात्रियों को प्रथम प्रशिक्षण 28 अप्रैल 2०24 को प्रात: 8:०० बजे से दोपहर 2:०० बजे तक मदरसा शाहे विलायत छोटे सरकार रोड क़बूलपुरा बदायूँ में तथा द्वितीय प्रशिक्षण 29 अप्रैल 2०24 को प्रात: 8:०० बजे से दोपहर 3:०० बजे तक अल-फारिया अस्पताल(बेसमेन्ट) लालपुल-कचहेरी रोड नाहर ख़ाँ सरायं बदायूँ में दिया जायेगा। समस्त हज यात्रियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करना आवश्यक है। ज़िला महिला चिकित्सालय बदायूँ स्थित अचल केन्द्र में हज यात्रियो को मैनिनगोकॉकल मैनिनजाइटिस वैक्सीन तथा सीजनल इन्फलुएन्जा वैक्सीन दिनांक 3०.०4.2०24 तथा ०1.०5.2०24 को प्रात: 11:०० बजे से सायं ०4:०० बजे तक किया जाएगा। सभी हज यात्री ससमय पहुच कर वैक्सीन/टीकाकरण अवश्य करायें। हज-2०24 की यात्रा पर जाने वाले तीर्थयात्रियों को वैक्सीन/टीकाकरण हेतु अपने साथ आधार कार्ड,1 पासपोर्ट साइज़ फ़ोटो,ब्लड ग्रुप रिपोर्ट, कोविड-19 वैक्सीनेशन कार्ड लाना अनिवार्य है।

स्पीप मैराथन दौड़ के माध्यम से दिया मतदान करने का संदेश

अमर भास्कर, संवाददाता

बदायूं। मतदाताओं को शत-प्रतिशत मतदान का संदेश देने के लिए शनिवार को स्वीप मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। मैराथन को कलेक्ट्रेट परिसर से नगर मजिस्ट्रेट अरूण कुमार ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मैराथन दौड़ कलेक्ट्रेट से प्रारम्भ होकर नगर के विभिन्न मार्गो से होते हुए राजकीय इण्टर कॉलेज पर समाप्त हुई। नगर मजिस्ट्रेट के द्वारा स्वीप मैराथन में शामिल सभी प्रतिभागियों को मतदान करने की शपथ भी ग्रहण करायी गयी। हस्ताक्षर अभियान अन्तर्गत अधिकारियों, कर्मचारियों, वृद्धजनों, महिलाओं व युवा शक्ति आदि ने हस्ताक्षर भी किए।

राजकीय इण्टर कालेज बदायूँ में मैराथन में सम्मिलित प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए नगर मजिस्ट्रेट अरूण कुमार ने कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक मत महत्वपूर्ण है। इसके मद्देनजर जागरूकता का सघन अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के महापर्व की मजबूती के लिए सभी मतदाता अपना मत अवश्य करें।

नगर मजिस्ट्रेट ने कहा कि मैराथन दौड़ का उद्देश्य है कि समाज के प्रत्येक मतदाता तक संदेश पहुंचे ताकि सभी लोग लोकसभा चुनाव में मतदान करें एवं सभी अपने पास पड़ोस में रहने वाले, रिश्तेदारों को भी जागरुक करें कि वह मतदान के दिन अपना वोट डालने अवश्य जाएं और लोकतंत्र को मजबूत बनाने में अपनी भागीदारी निभाएं।

उन्होंने कहा कि युवाओं का दायित्व है कि वे अपने परिवार और समाज को इस संबंध में जागरूक करें। मतदान के प्रतिशत को बढ़ाना भी हमारी एक बड़ी जिम्मेदारी है। उन्होंने निर्वाचन आयोग द्वारा 8० वर्ष से अधिक आयु और 4० प्रतिशत से अधिक दिव्यांग मतदाताओं के लिए होम वोटिंग सुविधा के बारे में बताया।

मैराथन जेल तिराहा, पुलिस लाइन चौराहा, इन्द्रा चौक, कश्मीरी चौक, गॉधी ग्राउण्ड चौराहा, छ: सडका, लावेला चौक, वन विभाग रोड होते हुए राजकीय इण्टर कालेज में पहुँची। इसमें एनएसएस, एनसीसी, स्काउट-गाइड, खिलाड़ी, विभिन्न विभागों के कार्मिक और आमजन की भागीदारी रही। सभी प्रतिभागियों ने हाथों में मतदाता जागरूकता से जुड़ी तख्तियां लेकर लगभग तीन किलोमीटर दौड़ लगाई।

इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक डा० प्रवेश कुमार, नोडल अधिकारी मैराथन क्रीडाधिकारी अमित रिछारिया, राजकीय इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य गुलनवाज आलम, इस्लामिया कालेज के प्रधानाचार्य अब्दुल सुबूर खॉ, सहप्रभारी स्वीप सरवर अली, डा० पंकज कुमार, जिला व्यायाम शिक्षक रामदास यादव, राष्ट्रपति पुरूस्कार प्राप्त शिक्षिका संगीता शर्मा, दिनेश पाल, सुबोध सुमन, बड़ी संख्या में आमजन व युवा शक्ति मौजूद रहे।

तेज रफ्तार कार की टक्कर से 7० साल के किसान की मौत, बिसौली-बिल्सी मार्ग पर हुआ हादसा

बदायूं। जनपद में बिसौली-बिल्सी मार्ग पर बीती शाम कार की टक्कर से 7० वर्षीय किसान मोहर सिंह यादव की मौत हो गई। टक्कर के बाद में कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में जाकर पलट गई। उसका चालक मौके से भाग गया। थाना पुलिस ने कार कब्जे में ले लिया है। किसान के शव का पोस्टमार्टम करा दिया है।

बिल्सी थाना क्षेत्र के गांव परौली निवासी मोहर सिंह यादव खेतीबाड़ी करते थे। वह बीती शाम करीब पांच बजे शेविंग कराने जा रहे थे। सैलून पर जाने के लिए वह सड़क पार कर रहे थे। उसी दौरान बिल्सी की ओर से तेज रफ्तार में आई ईको कार ने जोरदार टक्कर मार दी, जिससे वह उछलकर काफी दूर जा गिरे।

कार की टक्कर से मोहर सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक कार की रफ्तार इतनी तेज थी कि टक्कर मारने के बाद अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में जा गिरी लेकिन उसका चालक मौके से भाग गया। हादसे की सूचना पर किसान के परिवार वाले और गांव के कई लोग मौके पर पहुंच गए।

उन्होंने तुरंत इसकी सूचना थाना पुलिस को दी और वह किसान को गंभीर हालत में बिसौली के निजी अस्पताल ले गए, जहां किसान की उपचार के दौरान मौत हो गई। इधर मौके पर पहुंची पुलिस ने कार को कब्जे में ले लिया और परिवार वालों की तहरीर पर कार के नंबर के आधार पर एफआईआर दर्ज कर ली।

परिवार को बंधक बनाकर नगदी समेत लाखों की डकैती

बिसौली। थाना फैजगंज बेहटा क्षेत्र के गांव हबीबपुर दजराम में बीती रात बदमाशों ने परिवार को बंधक बनाकर 1० लाख रुपये से अधिक की डकैती को दिया अंजाम। फैजगंज बेहटा थाना क्षेत्र के हबीबपुर दजराम गांव का है जहां बीती रात हथियारों से लैस बदमाशों ने परिवार के सदस्यों को तमंचा और चाकू की नोक पर बंधक बनाकर नगदी एवं सोने और चांदी के जेवरात सहित 1० लाख रुपए से अधिक की डकैती को अंजाम दिया है। रात करीब 11 बजे छत के रास्ते बदमाश घर मे घुस आए। उस समय मुनीश और झरना कुमारी सो रहे थे जबकि सीमा जाग रही थी आते ही बदमाशों ने सीमा पर तमंचे तान दिए और उसके हाथ बांधकर मुंह में कपड़ा ठूंस दिया। कुछ बदमाश सोते हुए मुनीश और झरना कुमारी पर तमंचा ताने रहे और सीमा को शोर मचाने पर तीनों को जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद बदमाशों ने घर में रखे जेवर और ढाई लाख की नकदी सहित 1० लाख लूट की । लूटपाट करने के बाद बदमाश जिस रास्ते से आए थे, उसी रास्ते से भाग गए। सीमा ने जैसे तैसे हाथ खोलकर दिग्विजय को फोन कर घटना की जानकारी दी जिसके बाद सभी मौके पर आ गए। सूचना पर थाना फैजगंज बेहटा पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।

भाजपा नेता के साथ फोटो वायरल करने में सपा नेता पर रिपोर्ट

कुंवरगांव। गांव अर्सिस बर्खिन में कोटेदार दुर्गपाल उर्फ पप्पू भाजपा के बूथ अध्यक्ष हैं। आरोप है कि उन्होंने पहले सपा नेता आर्येंद्र यादव का भाजपा विधायक के साथ फोटो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। नाराज सपा नेता आर्येंद्र यादव ने बूथ अध्यक्ष एवं कोटेदार का नाम लिखते हुए फेसबुक पर गालीगलौज कर डाली। उन्होंने यह भी लिखा कि वह समाजवादी हैं और हमेशा रहेंगे। फेसबुक पर टिप्पणी देखकर बूथ अध्यक्ष कुंवरगांव थाने पहुंचे और सपा नेता के खिलाफ तहरीर देकर एफआईआर दर्ज करा दी। इस संबंध में सपा नेता का कहना है कि यह उनके खिलाफसाजिश है। उनका मोबाइल खराब हो गया था। उन्होंने किसी साथी के मोबाइल से अपनी फेसबुक आईडी खोली थी। हो सकता है किसी ने उनको बदनाम करने के लिए फेसबुक पर आपत्तिजनक टिप्पणी कर दी हो। इंस्पेक्टर राजेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि मामले में जांच के बाद कार्रवाई होगी।

तीन छात्र-छात्राओं को सम्मानित

बदायूँ। उच्च प्राथमिक विद्यालय गंगपुर पुख्ता में राष्ट्रीय आय एवम योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा में उत्तीर्ण हुए तीन छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक प्रवीण कुमार ने विद्यालय की प्रगति आख्या प्रस्तुत करते हुए भविष्य में भी विद्यालय की उत्तरोत्तर प्रगति की आशा व्यक्त की। कार्यक्रम में विद्यालय के समस्त शिक्षक एवम अभिभावक उपस्थित रहे।

डॉक्टर ने विद्यालय को दान किया पंखा

अमर भास्कर, संवाददाता

बदायूं। लगातार बढ़ती गर्मी के कारण जहां बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों के समय संचालन में परिवर्तन हुआ है वही कुछ दानवीर लोग सरकारी विद्यालयों को गोद लेकर वहां आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति कर रहे हैं।एक ऐसा ही आदर्श उदाहरण लोची नगला में स्थित क्लीनिक संचालक डॉ सुभाष चंद्र कश्यप ने कादरचौक विकास क्षेत्र में स्थित प्राथमिक विद्यालय चतुरी नगला के बच्चों के लिए के लिए एक पंखा दान में भेंट कर प्रस्तुत किया है।अपनी शैक्षिक गतिविधियों के लिये प्रसिद्ध इस विद्यालय की दो छात्राओं ने आश्रम पद्धित विद्यालय की प्रवेश परीक्षा में सफलता अर्जित कर विद्यालय को अग्रणी श्रेणी में सम्मिलित कराया है। विद्यालय के प्रधानाध्यापक हिर्देश चन्द्र माथुर ने कहा कि उनका सपना सामुदायिक सहभागिता की मदद से विद्यालय को कॉन्वेंट की टक्कर पर पहुंचाने का है। उन्हें आशा है कि शीघ्र ही समाजसेवियों का सानिध्य विद्यालय को प्राप्त होगा।

जेएस पीजी कॉलेज में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

अमर भास्कर, संवाददाता

बदायूं। जेएस (पीजी) कॉलेज उनोला में हैप्पी भारत संकल्प फाउंडेशन तथा एस आर डेंटल क्लीनिक एंड ट्रामा सेंटर जवाहर पुरी चौकी के पीछे बदायूं के तत्वाधान में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का कैंप लगाकर आयोजन किया गया। इस कैंप में ब्लड शुगर दिल की जांच किडनी की जांच डॉक्टर परामर्श सभी प्रकार की डेंटल समस्याओं का परामर्श दिया गया। इस अवसर पर डॉक्टर नम्रता जौहरी, डॉक्टर कृष्णा जौहरी, डॉक्टर शशांक माहेश्वरी ,डॉ अनुष्का ने छात्र-छात्राओं तथा महाविद्यालय के स्टाफ के चेकअप किए। इस अवसर पर महाविद्यालय के डायरेक्टर विकास यादव प्राचार्य, राहुल कुमार, छबिराम यादव, योगेंद्र कुमार, सत्येंद्र सिंह यादव मखलूश अली खान, भारत गुप्ता, अनिल द्विवेदी, उत्पल मिश्रा, अरविंद कुमार, साक्षी गुप्ता पूर्णिमा गौड़, सुनील कुमार भास्कर, सुधीर यादव आदि समस्त स्टाफ तथा छात्र छात्राएं भी उपस्थित रहे।

संपादकीय

क्षेत्रों पर देना होगा ध्यान

बीते कुछ दशकों की बात करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था का एक चमकदार पहलू रहा है सेवा निर्यात की गति। इसने न केवल कारोबारी अंतर को थामे रखने में मदद की है बल्कि यह देश में रोजगार निर्माण का स्रोत भी रहा है। इनमें उच्च कौशल वाले रोजगार शामिल हैं। सेवा क्षेत्र में देश की सफलता को देखते हुए इस बात का परीक्षण करना सही होगा कि वैश्विक स्तर पर हम कहां हैं और भविष्य की क्या संभावनाएं हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के ताजा मासिक बुलेटिन में प्रकाशित एक शोध आलेख कहता है कि पिछले तीन दशकों में यानी 1993 से 2022 के बीच डॉलर के संदर्भ में भारत का सेवा निर्यात 14 फीसदी से अधिक की समेकित सालाना वृद्धि दर से बढ़ा। यह 6.8 फीसदी की वैश्विक सेवा निर्यात वृद्धि की तुलना में काफी अच्छा है। इसके परिणामस्वरूप समान अवधि में सेवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 0.5 फीसदी से बढ़कर 4.3 फीसदी जा पहुंची। इसकी बदौलत भारत दुनिया में सातवां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक बन गया। 2001 में भारत 24वें स्थान पर था। फिलहाल दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवा निर्यात के क्षेत्र में भारत दुनिया में दूसरे और सांस्कृतिक तथा मनोरंजक सेवा निर्यात में छठे स्थान पर है। भारत को तकनीकी प्रगति और उसे अपनाने से फायदा हुआ है। भारत के कामकाजियों में अंग्रेजी बोलने वाले लोग अच्छी खासी तादाद में हैं और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी अनेक प्रतिभाएं हैं। इसके अलावा घरेलू डिजिटल बुनियादी ढांचे और नीतिगत ध्यान ने भारत को सूचना प्रौद्योगिकी और उससे संबद्ध सेवाओं के क्षेत्र में अहम वैश्विक हिस्सेदारी हासिल करने में मदद की है। यह बात बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारत में ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स की स्थापना के कारण भी महसूस की जा सकती है। 2015-16 से 2022-23 तक भारत में जीसीसी की संख्या 60 फीसदी बढ़कर 1,600 से अधिक हो चुकी है। दुनिया भर में डिजिटल तकनीक को अपनाने का सिलसिला बढ़ा है और भारत भी साफ तौर पर इससे लाभान्वित हुआ है। डिजिटल आपूर्ति वाली सेवाओं के निर्यात में 2019 से 2022 के बीच 37 फीसदी का इजाफा हुआ और यह भारत के लिए बहुत मददगार साबित हुआ। तकनीकी क्षेत्र से इतर भारत का यात्रा निर्यात भी मजबूत रहा है, हालांकि वह अभी भी महामारी के असर से जूझ रहा है और इसमें आंशिक हिस्सेदारी पर्यटन की भी है। भारत ने परिवहन सेवा निर्यात में भी अच्छा प्रदर्शन किया है और आय के मामले में इसकी रैंक 2005 के 19वें से सुधरकर 2022 में 10वीं हो गई है। भारत ने वैश्विक सेवा व्यापार में प्रतिस्पर्धी क्षमता भी प्रदर्शित की है, खासतौर पर दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित क्षेत्रों में। परंतु सवाल यह है कि क्या मध्यम से दीर्घ अवधि के दौरान यह मजबूती बरकरार रहेगी? भारतीय रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के शोध ने दिखाया है कि बाहरी मांग और मूल्य प्रतिस्पर्धा सेवा निर्यात को बहुत अधिक प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में एक फीसदी का इजाफा देश के सेवा निर्यात में 2.5 फीसदी बढ़ोतरी लाता है। इसके अलावा वास्तविक प्रभावी विनिमय दर में एक फीसदी इजाफा वास्तविक सेवा निर्यात में 0.8 फीसदी की गिरावट ला सकता है। चूंकि वैश्विक आर्थिक वृद्धि के आने वाले वर्षों में अपेक्षाकृत कमजोर रहने की आशंका है ऐसे में सेवा निर्यात को भी प्रतिकूल हालात का सामना करना पड़ सकता है। हालिया विश्लेषण बताता है कि विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश अपने तट के आसपास के देशों में कारोबार पर जोर दे रहे हैं। ऐसा भूराजनीतिक तनाव बढ़ने के कारण हुआ है। यह भारतीय निर्यातकों के लिए भी चुनौती बन सकता है। इतना ही नहीं भारत के लिए आर्टिफिशल इंटेलीजेंस खतरा भी है और अवसर भी। अभी यह भी स्पष्ट नहीं है कि यह मध्यम अवधि में सेवा व्यापार को कैसे प्रभावित करेगी। भारत को दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी सेवा निर्यात में तुलनात्मक रूप से बढ़त हासिल है लेकिन उसे अपने निर्यात में विविधता लाने और अन्य उभरते क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

अमर भास्कर

(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

- वरिष्ठ संरक्षक : वेदभानु आर्य
- संरक्षक : हामिद अली खाँ
- संरक्षक : सुरेश प्रसाद शर्मा
- प्रधान संपादक : फरीद क़ादरी
- संपादक : अबरार अहमद
- कानूनी सला. : मुहम्मद फुरकान, एड.
- व्यवस्थापक : ठा. वेदपाल सिंह
- मैनेजर : केपी यादव

हमारे यूट्यूब चैनल *Amar Bhaskar News* को सब्सक्राइब करें वैल आइकॉन दबाना न भूलें।
-सर्वेश उपाध्याय, मैनेजिंग एडिटर*

अगर आपके पास भी है कोई कविता, रचना, लेख, गजल एवं छंद तो हमें लिख भेजिए, हमारा पता है:-

अमर भास्कर कार्यालय
निकट होटल रिजेन्सी, लावेला चौक बदायूं (उ.प्र.)।
पिन कोड-243601
Email- amarbhashkar21@gmail.com
Whatsapp. No. 9411214614

मसाला ब्रांडों में कैंसर कारक पाए जाने का मामला

भारत के दो लोकप्रिय मसाला ब्रांडों में कैंसर कारक कीटनाशक पाए जाने को लेकर इन दिनों विदेशों में जो बवाल मचा है वह देश में खाद्य एवं औषधि नियमन के कमजोर मानकों की समस्या को एक बार फिर सामने लाता है। इस सप्ताह के आरंभ में अच्छी खासी भारतीय आबादी वाले हॉन्गकॉन्ग और सिंगापुर में एमडीएच और एवरेस्ट ब्रांड के मसालों की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यह प्रतिबंध तब लगा जब हॉन्गकॉन्ग के सेंटर फॉर फूड सेफ्टी ने एक रिपोर्ट में कहा कि एमडीएच के तीन और एवरेस्ट के एक मसाले में एथिलीन ऑक्साइड की मौजूदगी पाई गई है। यह तथ्य एक सामान्य जांच में सामने आया।

यह पहला अवसर नहीं है जब खानेपीने के भारतीय ब्रांड पर अन्य देशों के नियामकीय प्राधिकरण ने सवाल उठाए। गत वर्ष अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने साल्मोनेला बैक्टीरिया पाए जाने के बाद एमडीएच के खाद्य उत्पादों को वापस लेने को कहा था। भारत दुनिया में मसालों का सबसे बड़ा निर्यातक है और ऐसे में वाणिज्य मंत्रालय ने सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग से विस्तृत रिपोर्ट मंगवाई है और एक निर्यातक केंद्र में जांच शुरू की है। इसके साथ ही मसाला बोर्ड ने सिंगापुर और हॉन्गकॉन्ग को भेजे जाने वाले मसालों में एथिलीन ऑक्साइड के अवशेषों की अनिवार्य जांच की व्यवस्था की है।

यह आम चलन होता जा रहा है। स्वतंत्र संस्थानों मसलन गैर सरकारी संगठनों और इन्फ्लुएंसरों या अन्य देशों के नियामकीय और जांच प्राधिकरणों को भारतीय खाद्य एवं औषधीय उत्पादों में समस्या मिलती है जबकि भारतीय नियामक उन्हें पास कर चुके होते हैं।

उदाहरण के लिए भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण उस समय हरकत में आया जब एक स्विस जांच संस्था पब्लिक आई ने खुलासा किया कि खाद्य पदार्थ बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनी नेस्ले एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका में बेचे जाने वाले बेबी फूड में अतिरिक्त चीनी मिलाती है।

अत्यधिक सतर्कता के एक दुर्लभ उदाहरण में उसने 2015 में इसी कंपनी को लोकप्रिय इंस्टैंड नूडल्स ब्रांड मैगी में लेड होने की स्थिति में आड़े हाथों लिया था। हाल ही में एक इन्फ्लुएंसर के खुलासे के बाद एफएसएसएआई ने ई-कॉमर्स वेबसाइटों को चेतावनी दी कि वे बॉर्नविटा जैसे उत्पादों को स्वास्थ्यवर्द्धक और ऊर्जादायक पेय पदार्थों की श्रेणी में रखकर न बेचें।

यह आदेश राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की एक जांच के बाद आया जिसमें पाया गया था कि वर्षों से बच्चों को ध्यान में रखकर बेचे जा रहे बॉर्नविटा में चीनी का स्तर स्वीकार्य स्तर से काफी अधिक था। गत वर्ष भारत में बने कफ सिरप के कारण गांबिया, कैमरून और उज्बेकिस्तान में कथित तौर पर 140 बच्चों की मौत हो गई थी। ऐसे में आश्चर्य नहीं कि पतंजलि समूह की ओर से भ्रामक विज्ञापनों के मामले की सुनवाई कर रहे सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वह दैनिक उपभोग की उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वाली अन्य कंपनियों, खासकर बच्चों के उत्पाद बनाने वाली कंपनियों को गलत विज्ञापन करने से रोके। घरेलू नियमन की नाकामी का संबंध जन स्वास्थ्य के मुद्दों और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाओं से है। अब जबकि भारत आय श्रृंखला में ऊपर निकल गया है तो प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का बाजार भी विकसित हो रहा है। 2018 से यह क्षेत्र दो अंकों में वृद्धि हासिल कर रहा है। ऐसे में इसके लिए मजबूत मानकों और नियमन की आवश्यकता है। भारत में बच्चों में मधुमेह के मामले बढ़ रहे हैं और इस वजह से भी एफएसएसएआई को प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में चीनी की मात्रा पर नजर रखनी चाहिए। इसके साथ ही भारत में कृषि उपज की प्रचुरता के कारण निर्यात की बहुत अधिक संभावना है।

पहली बार चुनावी मैदान में ताल ठोक रही कोई कंपनी

भारत में पहले भी कई कॉरपोरेट दिग्गज और प्रवर्तक लोक सभा चुनावों में मैदान में उतरे हैं। मगर लोक सभा चुनावों के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब एक कंपनी के निवेश वाला राजनीतिक दल एर्णाकुलम और चलाकुडी सीट से लोक सभा चुनाव के लिए उम्मीदवार उतार रहा है। विश्व की दूसरी सबसे बड़ी बच्चों की परिधान निर्माता कंपनी किटेक्स गारमेंट्स ने अपनी राजनीतिक पार्टी ट्वेंटी20 की तरफ से दो उम्मीदवारों को इस बार चुनावी मैदान में उतारा है।

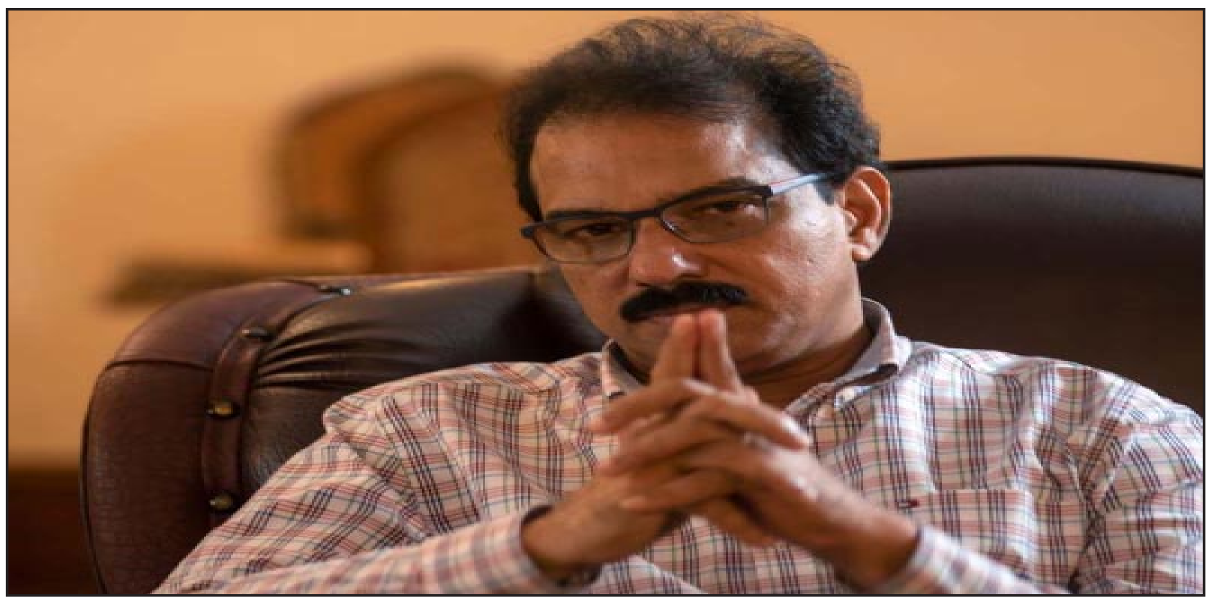

पार्टी ने अपने घोषणापत्र में लोगों को लुभाने के लिए कई वादे किए हैं। उनमें मुल्लापेरियार में एक नए बांध से लेकर समुद्री तट पर 250 किलोमीटर तक दीवारों का निर्माण शामिल है। साथ ही 50 फीसदी छूट वाले खाद्य सुरक्षा बाजार खोलने और दवाओं पर 80 फीसदी तक छूट वाली दवा दुकानें खोलने का भी वादा किया गया है। किटेक्स गारमेंट्स के प्रबंध निदेशक और ट्वेंटी20 के चेयरमैन साबू एम जैकब ने बिजनेस स्टैंडर्ड को बताया कि उनकी पार्टी केरल में माकपा, कांग्रेस और भाजपा के अलावा राजनीति का एक वैकल्पिक ब्रांड पेश करना चाहती है। हालांकि पार्टी का आम आदमी पार्टी के साथ गठबंधन था, लेकिन वह टूट गया है। जैकब के अनुसार, इसकी प्रमुख वजह आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल की वामपंथी सोच है।

ट्वेंटी20 ने कहा है कि उसका जोर और वादे साल 2026 के विधानसभा चुनावों को लक्ष्य में रखकर हैं। पार्टी ने दोनों सीटों से दो अधिवक्ताओं को चुनावी मैदान में उतारा है। चलाकुडी से चार्ली पॉल और एर्णाकुलम से एंटनी जूडी पार्टी के उम्मीदवार हैं।

खेल-खिलाड़ी

शशांक इस सीजन गलती से बने थे पंजाब का हिस्सा

नई दिल्ली। आईपीएल 2024 में कई नए कीर्तिमान रचे जा रहे हैं। सबसे बड़े स्कोर से लेकर सबसे बड़े चेज तक, पिछले सभी रिकॉर्ड टूट चुके हैं। पंजाब किंग्स ने इस सीजन के 42वें मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ 262 रन चेज कर डाले। यह सिर्फ आईपीएल नहीं, बल्कि टी20 इतिहास का भी सबसे बड़ा चेज रहा। पंजाब के लिए जहां जॉनी बेयरस्टो ने 48 गेंद पर आठ चैके और नौ छक्के की मदद से नाबाद 108 रन की तूफानी पारी खेली, वहीं प्रभसिमरन सिंह ने 20 गेंद में चार चैके और पांच छक्के की मदद से 54 रन बनाकर इसकी नींव रखी। हालांकि, सबसे मुश्किल काम 32 साल के शशांक सिंह ने किया। उन्होंने पंजाब की टीम को फिनिशिंग टच दिया। मैदान पर आते ही शशांक ने चैके-छक्कों की बरसात कर दी। उन्होंने 28 गेंद में दो चैके और आठ छक्के की मदद से नाबाद 68 रन की पारी खेली।

शशांक ने मैदान पर आने के बाद खुद को स्थिर करने के लिए समय नहीं लिया, बल्कि मैदान पर आते ही बड़े शॉट खेले। इससे बेयरस्टो पर से दबाव हट गया। 262 रन के लक्ष्य का पीछा करना आसान नहीं है, लेकिन शशांक ने कूल रहकर अपनी टीम को जीत दिलाई। यह इस सीजन में पहली बार नहीं है जब शशांक ने पंजाब को अपनी शानदार बल्लेबाजी से जीत दिलाई है। इससे पहले भी वह कई मुश्किल मौकों पर मैदान पर टिके रहकर शानदार अंदाज में फिनिश किया है। इस सीजन

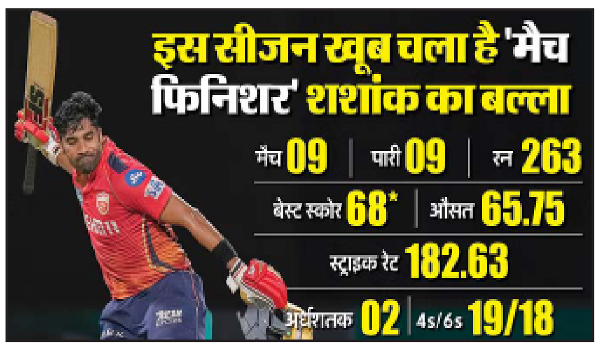

शशांक शानदार फॉर्म में दिखे हैं और उन्होंने आशुतोष के साथ मिलकर अपने मैच फिनिशिंग रोल के बखूबी निभाया है। शशांक और आशुतोष को इस सीजन की खोज माना जा रहा है। शशांक सिंह का बल्ला इस सीजन खूब बोल रहा है। वह अनकैप्ड हैं और इस सीजन से पहले आईपीएल में उनका कोई खास रिकॉर्ड भी नहीं रहा है। उन्हें कुछ एक मौके मिले, जिसे वह भुना नहीं सके। हालांकि, उन्होंने हार नहीं मानी और मेहनत करते रहे और अपने प्रदर्शन से सभी फ्रेंचाइजी को मुंहतोड़ जवाब दिया है। वह अनकैप्ड हैं और उन्हें इस सीजन के लिए हुए ऑक्शन में भी काफी शर्मिंदगी झेलनी पड़ी थी। शशांक वही बल्लेबाज हैं जिन्हें आईपीएल 2024 की नीलामी के दौरान पंजाब किंग्स ने गलती से खरीद लिया था। आईपीएल की नीलामी के दौरान टीम की मालकिन प्रीति जिंटा और नेस वाडिया ने उन पर बोली लगाई और बेस प्राइस 50 लाख रुपये में खरीदा। हालांकि, तुरंत ही नेस और प्रीति ने नीलामकर्ता से उन्हें वापस करने की मांग की और कहा कि गलती से उन्होंने शशांक को खरीदा है। उस समय शशांक पर क्या बीती होगी, यह वही जानते हैं। नीलामी में एक और शशांक थे जिनकी उम्र 19 वर्ष थी, लेकिन टीम मैनेजमेंट ने भूल से छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी को टीम का हिस्सा बना लिया। बाद में इस पर विवाद हुआ। हालांकि, नीलामी के अगले दिन ही पंजाब ने बयान जारी करते हुए कहा था कि उन्होंने सही शशांक को खरीदा है। अब हुआ जो भी हो, लेकिन इस 32 वर्षीय शशांक ने अपनी जबरदस्त पारी से टीम मैनेजमेंट को मुंहतोड़ जवाब दिया है। उनकी बल्लेबाजी इतनी जबरदस्त रही है कि प्रीति जिंटा भावुक हो गईं और उन्होंने शशांक के लिए एक पोस्ट तक लिख दिया।

शशांक इससे पहले 2022 में सनराइजर्स हैदराबाद, 2019-21 तक राजस्थान रॉयल्स और 2017 में दिल्ली कैपिटल्स टीम का हिस्सा रह चुके हैं। शशांक ने प्रोफेशनल क्रिकेट की शुरुआत मुंबई की नामी लीग कांगा लीग से की थी और वहां उन्हें लंबे-लंबे छक्के लगाने वाले बल्लेबाज के रूप में जाना जाता था। शशांक शुरू से अनओर्थोडॉक्स शॉट लगाने में माहिर हैं।

राजस्थान से हिसाब चुकाने उतरेगा लखनऊ

नई दिल्ली। लखनऊ सुपरजाएंट्स पहले मुकाबले में राजस्थान रॉयल्स के हाथों मिली हार का हिसाब चुकाने शनिवार को इकाना स्टेडियम में उतरेगी। हालांकि, यह आसान नहीं होगा, क्योंकि राजस्थान को अब तक आठ मैचों में महज एक हार मिली है। केएल राहुल एंड कंपनी को प्लेऑफ के लिए अपनी संभावनाएं मजबूत करने के लिए अपना सब कुछ झोंकना होगा। वहीं राजस्थान की टीम लखनऊ पर लगातार दूसरी जीत दर्ज करके अंक तालिका में अपनी स्थिति को मजबूत करना चाहेगी।

अभी तक आठ मुकाबलों में लखनऊ की बल्लेबाजी उनकी गेंदबाजी से बेहतर दिखी हैं। टीम के कप्तान केएल राहुल के अलावा विस्फोटक बल्लेबाज निकोलस पूरन ने प्रभावित किया है। चेन्नई के खिलाफ पिछले मैच में 63 गेंदों पर नाबाद 124 रन की आतिशी शतकीय पारी खेलने वाले मार्कस स्टोइनिस ने धमाकेदार अंदाज में फॉर्म वापसी की।

अपनी रफ्तार से खौफ बनाने वाले स्पीडस्टार मयंक यादव चोटिल होने के बाद अभी तक टीम में वापसी नहीं कर पाए हैं। युवा लेग स्पिनर रवि बिश्नोई ने प्रदर्शन से निराश किया है। सात मैचों में 28.77 की औसत से नौ विकेट अपनी झोली में डालने वाले यश ठाकुर ने कुछ हद तक प्रभावित किया है। स्पिनर क्रुणाल पांड्या ने किफायती गेंदबाजी की है, पर वे विकेट चटकाने में नाकाम रहे। तेज गेंदबाज मोहसिन खान ने पांच मैच में सात विकेट तो लिए, लेकिन वे काफी महंगे साबित हुए हैं।

राजस्थान रॉयल्स की बल्लेबाजी में जहां युवा रियान पराग ने धमाकेदार प्रदर्शन करते हुए 63.60 के औसत ने 318 रन बनाए हैं, दूसरी ओर कप्तान सैमसन भी 62.80 की औसत से 314 रन बना चुके हैं। इसके अलावा जोस बटलर और मुंबई के खिलाफ शतक जड़ने वाले यशस्वी जायसवाल भी लखनऊ के लिए परेशानी का सबब बन सकते हैं। टी20 विश्वकप में भारतीय टीम में जगह बनाने के दावेदार लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल आठ मैच में 20.38 की औसत ने 13 विकेट अपनी झोली में डाले हैं, जबकि दूसरी ओर अनुभवी ट्रेंट बोल्ट ने आठ मैच में 23.22 की औसत से नौ विकेट लिए। स्पीडस्टार मयंक यादव लंबे समय के बाद नेट्स पर गेंदबाजी करते दिखे। पूरी रफ्तार से गेंदबाजी करते देख आस जगी है कि मयंक को राजस्थान के खिलाफ मौका दिया जा सकता है। एलएसजी के बल्लेबाजी कोच एस श्रीराम ने बताया कि मयंक ने नेट्स पर गेंदबाजी की है। हम उनकी फिटनेस का आंकलन करेंगे। अगर कोई परेशानी नहीं आती है, तो उन्हें राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ मौका दिया जा सकता है।

ड्रग्स सौदागर बनमीत के घर से 24 घंटे बाद लौटी ईडी

हरिद्वार। अमेरिका में प्रतिबंधित दवाइयां (ड्रग्स) बेचने व मनी लांड्रिंग के आरोपित बनमीत नरूला के घर प्रर्वतन निदेशालय ने शुक्रवार को रातभर तलाशी ली। शनिवार की सुबह पांच बजे यानी 24 घंटे बाद टीम वापस लौट गई है। पुलिस सूत्रों के अनुसार ईडी को कई महत्वपूर्ण दस्तावेज मिले है। साथ ही बनमीत के एक परिवारिक सदस्य को गिरफ्तार भी किया गया है।

हल्द्वानी के तिकोनिया गुलाटी चिकन वाली गली में रहने वाले बनमीत नरूला अप्रैल 2019 में लंदन में गिरफ्तार हुआ था। मार्च 2023 में उसे अमेरिका प्रत्यर्पित किया गया।

इसी साल जनवरी में उसने अपना जुर्म स्वीकार किया था। अमेरिका कोर्ट ने बनमीत को डार्क वेब में ड्रग्स बेचने के आरोप में पांच साल की सजा सुनाई है। वह जेल में बंद है। बनमीत से 150 मिलियन डालर जब्त करने का भी आरोप है। बता दें कि, बनमीत हल्द्वानी का रहने वाला है, इसलिए शुक्रवार की सुबह पांच बजे ईडी व देहरादून पुलिस हल्द्वानी पहुंची। ईडी व देहरादून पुलिस ने बनमीत के घर की घेराबंदी कर तलाशी शुरू कर दी थी। बनमीत के परिवारजनों से रातभर पूछताछ रही। कई महत्वपूर्ण दस्तावेज की जांच की। बैंक में लेनदेन के मामले की जांच के लिए दस्तावेज कब्जे में लिए हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार शनिवार की सुबह पांच बजे ईडी की टीम हल्द्वानी से लौटी है। अपने साथ बनमीत के परिवार के तरविंदर सिंह को भी अपने साथ लेकर गई है।

रामपुर निवासी मौलाना की अजमेर में हत्या

अमर भास्कर, ब्यूरो

मुरादाबाद। शाहबाद के सैफनी थाना क्षेत्र के पुराना रायपुर के मझरा गांव निवासी मौलाना मोहम्मद माहिर अजमेर शरीफ के मोहम्मदी मस्जिद में इमाम थे। शुक्रवार रात करीब ढाई बजे अजमेर के ही मोहम्मदी मस्जिद में तीन नकाबपोशों ने उनकी हत्या कर दी। बदमाशों ने इमाम पर डंडों से ताबड़तोड़ वार किए।

परिजनों ने बताया कि इमाम के साथ कमरे में पढ़ने वाले बच्चे भी सो रहे थे। बदमाशों ने पहले बच्चों को डरा धमका कर कमरे से बाहर निकाला था। उसके बाद घटना को अंजाम दिया था। घटना के बाद वह

फरार हो गए। चीख-पुकार मचाने पर मोहल्ले के लोग इकट्ठे हुए।

इसके बाद अजमेर की रामगंज थाना पुलिस डॉग स्क्वायड के पहुंची। घटना की जानकारी परिजनों को मिली तो वह सन्न रह गए। चीखपुकार सुनकर रायपुर गांव के लोग इकट्ठे हुए और इस हत्या की बात पता लगी। इसके बाद परिवार के कई लोग अजमेर के लिए रवाना हो गए।

विकराल होती जंगलों की आग ने बढ़ाई चिंता

देहरादून। उत्तराखंड में विकराल होती जंगलों की आग ने चिंता बढ़ा दी है। इसे देखते हुए सीएम धामी हल्द्वानी में अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करेंगे। सीएम धामी ने कहा कि प्रदेश में हो रही वनाग्नि की घटनाओं पर जल्द ही काबू पा लिया जाएगा।

सेना से भी इस संबंध में सहायता ली जा रही है और हेलिकॉप्टर के माध्यम से आग बुझाने का कार्य किया जा रहा है। आज हल्द्वानी में अधिकारियों के साथ भी वनाग्नि से संबंधित विषयों

पर समीक्षा बैठक करूंगा। गढ़वाल मंडल के टिहरी, पौड़ी, उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग और चमोली जिले के जंगल लगातार धधक रहे हैं। ज्यादातर चीड़ के जंगल होने के कारण आग तेजी से फैल रही है। वनकर्मी आग बुझाने में जुटे हैं। एक स्थान पर आग बुझती है तो दूसरी जगह भड़क उठती है। दूसरी तरफ कुमाऊं में जंगलों में लगी आग विकराल होती जाती जा रही है। आज शनिवार को नैनीताल के जंगलों में लगी आग को बुझाने के लिए वायुसेना के हेलिकॉप्टर की मदद ली गई। भीमताल झील से पानी भरकर जंगलों में पानी डालने का काम करना शुरू कर दिया है।

मतदाता को फोटो पहचान दस्तावेजों मे से कोई भी एक दस्तावेज प्रस्तुत करना अनिवार्य

अमर भास्कर, ब्यूरो

कासगंज। एकसभारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जो मतदाता मतदान करते समय अपना मतदाता पहचान पत्र-एपिक प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं हैं। तो उन्हें अपनी पहचान के लिये उल्लिखित वैकल्पिक फोटोयुक्त पहचान पत्र दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज प्रस्तुत करना जरूरी होगा।

ऐसे मतदाता अपना पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेन्स, राज्यध्केन्द्र सरकार के लोक उपक्रम, पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों द्वारा अपने कर्मचारियों को जारी किए गये फोटो युक्त सेवा पहचान पत्र, बैंकों, डाकघरों द्वारा जारी की गई फोटोयुक्त पासबुक, पैन कार्ड, एनपीआर के अंतगर्त आरजीआई द्वारा जारी किये गये स्मार्ट कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अन्तर्गत जारी स्वास्थ्य बीमा स्मार्ट कार्ड, फोटोयुक्त पेंशन दस्तावेज, सांसदों, विधायकों, विधान परिषद सदस्यों को जारी किए गए सरकारी पहचान पत्र, आधार कार्ड में से कोई भी एक फोटोयुक्त पहचान पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी राकेश कुमार पटेल ने बताया। कि ऐसे मतदाता जो दूसरे विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा जारी पहचान पत्र प्रस्तुत करते हैं तो ऐसे कार्ड भी स्वीकार किये जायेंगे। बशर्ते उस मतदाता का नाम उस मतदान केन्द्र से संबंधित निर्वाचक नामावली में मौजूद हो, जहां मतदाता मतदान करने उपस्थित हुआ है।

सार-संक्षेप

बिजली दरों में 10 साल में लगातार तीसरी बड़ी बढ़ोतरी

उत्तराखंड। प्रदेश में पिछले 10 साल में इस साल बिजली दरों में लगातार तीसरी बड़ी बढ़ोतरी हुई है। इससे पहले 2015 में सात प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी की गई थी। वहीं, 2009 में सर्वाधिक 17 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई थी। उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड जो बिजली यूपीसीएल को देता है, उसके दामों में भी 7.14 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। यूजेवीएनएल ने 24.84 प्रतिशत की मांग रखी थी। नियामक आयोग के अध्यक्ष एमएल प्रसाद के मुताबिक, नौ बड़े विद्युत गृहों छिबरो, खोदरी, ढकरानी, ढालीपुर, कुल्हाल, चीला, रामगंगा, खटीमा, मनेरी भाली-1 के लिए यूजेवीएनएल ने वार्षिक स्थिर प्रभार 672.85 करोड़ मांगा था, जिसके सापेक्ष नियामक आयोग ने 576.63 करोड़ दिए। मनेरी भाली-2 के लिए यूजेवीएनएल ने 240.26 करोड़ की मांग की थी, जिसके सापेक्ष 207.05 करोड़ मिले। कुल मिलाकर यूजेवीएनएल की 24.84 प्रतिशत की मांग के सापेक्ष 7.14 प्रतिशत बढ़ोतरी को ही मंजूरी मिली है। वहीं, यूपीसीएल को इस वित्तीय वर्ष में यूजेवीएनएल के 126.14 करोड़ लौटाने को भी कहा गया है। वह 12 समान किस्तों में लौटा सकता है। पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन ऑफ उत्तराखंड लिमिटेड ने इस वित्तीय वर्ष में वार्षिक पारेषण प्रभार के लिए कुल 607.24 करोड़ रुपये की मांग रखी थी, जिसके सापेक्ष आयोग ने 364.37 को मंजूरी दी है। कुल मांग 71.43 प्रतिशत बढ़ोतरी के सापेक्ष 2.86 प्रतिशत की बढ़ोतरी को ही आयोग ने मंजूरी दी है। वहीं, पिटकुल ने पारेषण प्रभार के अतिरिक्त 300 करोड़ 42 लाख रुपये की प्रारंभिक इक्विटी के लिए लाभांश व वित्तयी वर्ष 2024-25 के लिए 573.21 करोड़ की मांग शासन को पावर डेवलपमेंट फंड अंशदान के रूप में इक्विटी के तौर पर मांगी थी, जिसे नियामक आयोग ने नकार दिया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया अपना नाम और मतदान केंद्र की करें जांच

अमर भास्कर, ब्यूरो

कासगंज। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 को स्वतंत्र, निष्पक्ष, पारदर्शी रूप से सकुशल सम्पन्न कराये जाने हेतु जिला निर्वाचन अधिकारी सुधा वर्मा ने अवगत कराया कि मतदान के दिन के लिए पहले से तैयार रहना चाहिए, मतदाता सूची में अपना नाम जांचें और अपने मतदान केंद्र की जांच करें। मतदाताओं को उनके मतदान केंद्र में मतदाता सूची की क्रम संख्या, मतदान की तारीख, समय आदि जानने में सुविधा प्रदान करने के लिए, मतदाता सूचना पर्ची सभी नामांकित मतदाताओं को मतदान की तारीख से कम से कम 5 दिन पहले बीएलओ द्वारा जारी की जाती है। उन्होंनें बताया कि इसमें क्यूआर कोड के साथ मतदान केंद्र, तिथि, समय आदि जैसी जानकारी शामिल है लेकिन मतदाता की तस्वीर नहीं है, इसे पहचान के प्रमाण के रूप में अनुमति नहीं है, पर्चियाँ सामान्य मतदाता सूचना पर्चियों के साथ ब्रेल सुविधाओं के साथ जारी की जाती हैं।

विधानसभा संचालन समिति की बैठक की आयोजित

अमर भास्कर, ब्यूरो

संभल। चन्दौसी में शनिवार को गौशाला रोड स्थित यदुवंशी गार्डन में भारतीय जनता पार्टी विधानसभा कार्यालय पर विधानसभा संचालन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राज्य मंत्री माध्यमिक शिक्षा विभाग गुलाब देवी और जिला प्रभारी हेमंत राजपूत रहे। हेमंत राजपूत ने विधानसभा संचालन समिति के पदाधिकारियों के साथ वार्ता की और विधानसभा में उनके द्वारा हो रहे कार्य की समीक्षा ली और कहा। कि लोकसभा संभल की मतदान तिथि नजदीक आ गयी है। इसलिए हम सभी को अपने अपने क्षेत्र में जाकर मतदाताओं से संपर्क कर मतदान प्रतिशत को बढ़ाने का

कार्य करें और पन्ना प्रमुख के साथ जाकर अपने पन्ने की जिम्मेदारी को पूरा करें। राज्य मंत्री गुलाब देवी ने कहा कि भाजपा प्रत्याशी परमेश्वर लाल सैनी को अधिक से अधिक वोट दिलाकर जीत दिलाने में मदद करे और पूरी विधानसभा में अलग अलग टोली बनाकर जनसंपर्क करे।

जिला अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह ने कहा कि सभी पदाधिकारी बूथ अध्यक्षों और उनकी समिति के साथ बैठक कर बूथ पर सभी लाभार्थी मतदाताओं से सम्पर्क कर उन्हें मोदी जी की लाभकारी योजनाओं को बताकर परमेश्वर लाल सैनी के पक्ष में अधिक से अधिक मतदान करने की अपील करे।

उन्होनें इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष हरेन्द्र सिंह चौधरी और संचालन मनोज दिवाकर ने किया। बैठक में लोकसभा सहप्रभारी धर्मेंद्र नाथ मिश्रा, विधानसभा प्रभारी सुभाष भटनागर, विधानसभा संयोजक विनोद कुमार बिन्नी,नगर पालिका अध्यक्ष पति अखिलेश कुमार,मनोज कठेरिया, अंकित जैन, सतीश अरोरा, विधानसभा संयोजक मीडिया अभिनव शर्मा, शरद शर्मा, ललित मोहन, गिर्राज मौर्य, आकाश आहूजा, बबिता शर्मा, शीनू गुप्ता, नीलम अरोरा, आमोद वार्ष्णेय, राज कुमार ठाकरे, एड हर्षित गौड़, राज कुमार यादव, हरेन्द्र कोहली, महावीर सिंह, इंद्रपाल शर्मा, योगेश गोल्डन, अमित सिंह, शुभम अग्रवाल, यश मदन, देवेंद्र गुप्ता, दीपांशु बंसल, नरेंद्र कुमार, एड धारा सिंह, मुकेश जाटव आदि उपस्थित रहे।

नई गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

अमर भास्कर, ब्यूरो

संभल। पुलिस अधीक्षक द्वारा डायल 112 की नई गाडियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया जनपद संभल में लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दृष्टिगत कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाये रखने व आपात स्थिति में त्वरित पुलिस सहायता उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से बीते दिन को पुलिस अधीक्षक सम्भल कुलदीप सिंह गुनावत द्वारा जनपद सम्भल डायल 112 पुलिस को पुलिस मुख्यालय से प्राप्त डैशबोर्ड कैमरे, बॉडी वार्न कैमरे, जीपीएस आदि आधुनिक सुविधाओं से लैस 04 नई स्कार्पियों गाड़ियां व 02 नई पल्सर मोटरसाइकिल को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

ई-रिक्शा स्टार्ट करने पर तीन वर्षीय बच्चे की मौत

अमर भास्कर, ब्यूरो

मुरादाबाद। रामपुर के एक घर में आया नया ई-रिक्शा एक परिवार को जीवनभर का दर्द दे गया। शाहबाद के हुसैनगंज गांव में शुक्रवार को तीन वर्षीय लखन के दादा नया ई-रिक्शा लेकर आए थे। वह चाबी लगी छोड़कर अंदर चले गए। घर के बाहर खेलते हुए लखन ई-रिक्शा पर चढ़ गया और एक्सीलेटर दबा दिया।

अनियंत्रित होकर ई-रिक्शा पलट गया और उसके नीचे दबकर बच्चे की मौत हो गई। हुसैनगंज गांव निवासी जितेंद्र के पिता शुक्रवार को परिवार के पालन-पोषण के लिए बड़ी उम्मीदों के साथ नया ई-रिक्शा लाए थे। शुक्रवार शाम को ई-रिक्शा घर के बाहर खेतों की ओर खड़ा हुआ था। सभी लोग घर के अंदर थे। ई-रिक्शा में चाबी लगी हुई थी। इसी दौरान जितेंद्र का बेटा लखन खेलता हुआ ई-रिक्शा पर चढ़ गया और एक्सीलेटर दबा दिया। तेजी के साथ ई-रिक्शा आगे बढ़ा और अनियंत्रित होकर खेत में घुसकर पलट गया। लखन ई-रिक्शा के नीचे ही दब गया। चीख सुनकर परिजन बाहर आए और ई-रिक्शा को हटाया। लखन के सिर से खून बहता देखकर मां बेसुध हो गई। परिजन तुरंत घायल लखन को लेकर सीएचसी पहुंचे, जहां चिकित्सकों ने देखते ही उसे मृत घोषित कर दिया। पिता जितेंद्र बेटे को गोद में लिए बिलख-बिलख कर रोने लगे। परिजनों ने बताया कि जितेंद्र के दो बेटों में से लखन छोटा था। जितेंद्र गांव में ही मजदूरी करते हैं। बीते दिनों अमरोहा के हसनपुर के गांव हथियाखेड़ा निवासी सतपाल सिंह का पांच वर्षीय बेटा मोंटी अपने तीन वर्षीय तहेरे भाई नीतू के साथ घर के आंगन में खेल रहा था। आंगन में मोंटी के ताऊ का ई-रिक्शा खड़ा था।

भरोसे पर काम करना पड़ा युवक को भारी

अमर भास्कर, ब्यूरो

सम्भल। हयातनगर थाना क्षेत्र के ग्राम लहरा कमंगर निवासी जफर पुत्र सलारबख्श ने बीते दो साल पहले बबलू व कासिम के साथ स्क्रैप का कारोबार कर उनके गोदाम शिकारपुर जनपद बुलन्दशहर में लाखों का स्क्रैप बेचा था। आरोप है कि बबलू व कासिम ने पुराने पैसे में से बचे चार लाख पचप्पन हजार में तीन लाख देकर बाकी रकम आगे माल लेकर आने पर अदा करने का वादा कर लिया। जिस पर पीड़ित भरोसा कर बीते पांच माह पूर्व फिर गोदाम पर साढ़े तीन लाख का माल पँहुचा

दिया। जिस कारण पीड़ित का गोदाम पर हिसाब करने पर पांच लाख गयारह हजार दो सौ सत्तर रुपए बकाया निकले। जिस पर पीड़ित से कहा गया। तुम्हारे पैसे दो चार दिन में दे दिए जाएंगे। लेकिन लगातार चक्कर काटने के बाद भी पैसे नही दिए गए आरोप है। कि अब गोदाम स्वामी अब उसको पैसे मांगने पर जान से मारने की धमकी दे रहे है। जिस की शिकायत थक हार कर पीड़ित ने पुलिस अधीक्षक बुलंदशहर से कर कानूनी कार्यवाही की माग की है।

असमोली विधासभा में जन आशीर्वाद यात्रा करने पहुंचे परमेश्वर सैनी

अमर भास्कर, ब्यूरो

संभल। लोकसभा क्षेत्र की विधानसभा असमोली के मंडल ऐचोडा कम्बोह के विभिन्न गांवों इनायतपुर, ततारपुर, रझा, चंदपुरा, भूड़ा बेगमपुर, दबोई, भटपुर, कुतुबपुर, सतूपुर, हरिपुर, नन्दपुर और शेखपुरी में आयोजित हुई। जन आशीर्वाद यात्रा। भाजपा की जन आशीर्वाद यात्रा असमोली विधानसभा के कई गांवों में पहुंची जिसका नेतृत्व संभल लोकसभा से भाजपा प्रत्याशी परमेश्वरलाल सैनी ने किया। सैनी ने लोगों के जाकर लोगों से उनका आशीर्वाद मांगा। इसके साथ ही जनता को विश्वास दिलाते हुए कहा। कि भाजपा की जीत

के बाद संभल विकास की नई ऊंचाईयों को छूएगा। क्षेत्र की हर समस्या को हल करना ही हमारी पहली प्राथमिकता रहेगी। इसके साथ ही सैनी ने मोदी सरकार के द्वारा देश में होने वाले कार्यों और योजनाओं का भी जिक्र किया। सैनी ने जनता को वादा किया। वहा की लोकसभा चुनाव में भाजपा की जीत के बाद लोकसभा में विकास के कई कार्य होंगे। इस यात्रा में परमेश्वर लाल सैनी को जनता का भरपूर समर्थन मिला एवं उनका सम्मान किया। इस यात्रा के दौरान परमेश्वर लाल सैनी के साथ दर्जाप्राप्त राज्य मंत्री ओमप्रकाश गोला के साथ चौधरी खेलेन्द्र सिंह, अजय वीर सिंह, अंजू चौधरी, योगेन्द्र त्यागी नकुल सिंह ओलख मन्नू धारीवाल आदि उपस्थित रहे।

मनचलों को युवती के साथ छेड़छाड़ करना पड़ा भारी

अमर भास्कर, ब्यूरो

संभल। बाजार से एक नाबालिक किशोरी सामान लेने गई थी सामान लेकर जब किशोरी वापस अपने घर जा रही थी। तो मोहल्ले के ही कुछ युवकों ने रास्ते में किशोरी को रोक लिया और उसके साथ छेड़छाड़ की किशोरी रोती हुई। घर पहुंची। और आप बीती परिजनों को सुनाई। जिस पर परिजनों ने किशोरी को लेकर थाने पहुंचे और छेड़छाड़ कर रहे युवकों के खिलाफ तैयारी देकर कार्रवाई की मांग की थाना हयात नगर क्षेत्र मैं एक 15 वर्षीय दलित किशोरी घर का सामान लेने बाजार गई थी। सामान लेकर जब किशोरी वापस अपने घर को जा रही थी। तभी मोहल्ले के ही कुछ युवकों ने किशोरी को रोक लिया और उसके साथ छेड़छाड़ करने लगे किशोरी ने छेड़छाड़ का विरोध किया।

किसी तरह युवको से छूटकर अपने घर पहुंची घर पहुंच कर किशोरी ने अपने परिजनों को विस्तार पूर्वक सारी घटना से अवगत कराया। जिस पर परिजन किशोरी को लेकर थाना हयात नगर पहुंचे और मोहल्ले के ही एक नामजद व दो अज्ञात के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की थाना प्रभारी संत कुमार ने बताया। कि युवती के परिजनों ने जो तहरीर थाने में दी है। उसके आधार पर मुकदमा पंजीकृत कर दिया गया है।

बीडीओ से स्पष्टीकरण तलब

अमर भास्कर, ब्यूरो

मुरादाबाद। सीडीओ सुमित यादव ने शनिवार विकास खंड भगतपुर टांडा के अस्थायी गोआश्रय स्थल रानी नांगल तथा भदगवां का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। रानी नागल में निरीक्षण के दौरान प्रधान द्वारा सफाईकर्मी के गांव में सफाई कार्य के लिए नहीं आने की शिकायत पर उसे निलंबित करने के जहां निर्देश दिए। भदगवां की गोशाला में हरे चारे और भूसे की व्यवस्था नहीं होने पर नोडल अधिकारी एवं नायब तहसीलदार पल्लवी बानिया का स्पष्टीकरण तलब किया है। रानी नागल में निरीक्षण के दौरान मौजूद प्रधान ने सीडीओ को बताया कि गांव में तैनात सफाई कर्मचारी पिछले कई माह से सफाई करने नहीं आ रहा है।

बंधक समझौते पर चल रही बातचीत का था यह आखिरी मौका

मास्को। दुनिया के कई देश युद्ध में घिरे हुए हैं। जहां रूस-यूक्रेन जंग को दो साल से ज्यादा का वक्त हो चुका है। वहीं ईरान और इस्राइल के बीच भी जंग छिड़ती दिख रही है। दो कट्टर दुश्मन देशों के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच गया है। इधर, हमास और इस्राइल बीते छह महीने से लड़ाई लड़ रहे हैं।

हमास को निशाना बनाने के लिए दक्षिणी गाजा में अपने सैन्य अभियान के साथ आगे बढ़ने के संकल्प के साथ ही इस्राइल ने राफा पर हवाई हमले तेज कर दिए हैं। हालांकि, इस्राइल ने जमीनी हमला शुरू करने से पहले एक बार आखिरी मौका देने की बात कही।

उसने चेतावनी देते हुए कहा कि वह बंधकों की रिहाई पर समझौता करने के लिए गाजा और मिस्र के बीच चल रही बातचीत को आखिरी मौका दे रहा था। राफा में हमले और हमास के साथ बंधक समझौते पर इस्राइली और मिस्र के एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के बीच चर्चा शुक्रवार को समाप्त हो गई। एक रिपोर्ट के अनुसार इस्राइल ने चेतावनी दी कि लंबे समय से नियोजित हमले करने से पहले संघर्ष विराम समझौते के लिए यह आखिरी मौका था।

इस्राइल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बातचीत काफी अच्छी रही। सभी मापदंडों में प्रगति हुई है। मिस्र के प्रतिनिधिमंडल के साथ हुई चर्चा को लेकर इस्राइली अधिकारी ने कहा कि राफा में आगे बढ़ने के इस्राइल के बहुत गंभीर इरादे हैं। मिस्रवासी हमास पर दबाव डालने के लिए तैयार दिखाई दिए।

राफा में हमले और हमास के साथ बंधक समझौते पर इस्राइली और मिस्र के एक उच्च-स्तरीय प्रतिनिधिमंडल के बीच चर्चा शुक्रवार को समाप्त हो गई। एक रिपोर्ट के अनुसार इस्राइल ने चेतावनी दी कि लंबे समय से नियोजित हमले करने से पहले संघर्ष विराम समझौते के लिए यह आखिरी मौका था। इस्राइल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बातचीत काफी अच्छी रही। सभी मापदंडों में प्रगति हुई है। मिस्र के प्रतिनिधिमंडल के साथ हुई चर्चा को लेकर इस्राइली अधिकारी ने कहा कि राफा में आगे बढ़ने के इस्राइल के बहुत गंभीर इरादे हैं। मिस्रवासी हमास पर दबाव डालने के लिए तैयार दिखाई दिए।

रिपोर्ट के अनुसार, कतर और मिस्र द्वारा महीनों की बातचीत के बाद भी मौलिक उद्देश्यों पर असहमति ने हमास और इस्राइल को एक समझौते पर आने से रोक दिया है। इससे पहले, 15 मार्च को इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि उन्होंने राफा में एक ऑपरेशन के लिए सेना की योजना को मंजूरी दे दी है। हालांकि, ऑपरेशन का समय नहीं बताते हुए नेतन्याहू ने कहा था।

इस्त्राइल ने राफा पर हमले किए तेज

नई दिल्ली। दुनिया के कई देश युद्ध में घिरे हुए हैं। जहां रूस-यूक्रेन जंग को दो साल से ज्यादा का वक्त हो चुका है। वहीं ईरान और इस्राइल के बीच भी जंग छिड़ती दिख रही है। दो कट्टर दुश्मन देशों के बीच तनाव अपने चरम पर पहुंच गया है। इधर, हमास और इस्राइल बीते छह महीने से लड़ाई लड़ रहे हैं।

हमास को निशाना बनाने के लिए दक्षिणी गाजा में अपने सैन्य अभियान के साथ आगे बढ़ने के संकल्प के साथ ही इस्राइल ने राफा पर हमले तेज कर दिए हैं।

हालांकि, हमास ने कह दिया है कि भले ही इस्राइल ने हमले तेज कर दिए हो पर वह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाएगा। वहीं, एक दिन पहले ही मिस्र ने भी चेतावनी दी थी। इस्राइल ने चेतावनी के बावजूद राफा पर हवाई हमले शुरू किए, इससे बड़ी संख्या में हताहत होने की संभावना है।

हूती विद्रोहियों ने भारत आ रहे जहाज पर किया हमला, मिसाइल से बनाया निशाना

यमन। देश के हूती विद्रोहियों ने शनिवार को भारत आ रहे जहाज पर मिसाइल से हमला किया। यह हमला लाल सागर में किया गया। हूती विद्रोहियों ने ही बयान जारी कर इसकी जानकारी दी है। हूती विद्रोही लाल सागर और अदन की खाड़ी के इलाके से गुजरने वाले जहाजों पर बीते कई महीनों से हमले कर रहे हैं। ब्रिटेन की मेरीटाइम सिक्योरिटी फर्म एंब्रे ने बताया है कि हमले के चलते जहाज को नुकसान हुआ है।

एंब्रे ने बताया कि जिस जहाज पर हमला हुआ, उस पर पनामा का झंडा लगा है, लेकिन जहाज का स्वामित्व ब्रिटिश कंपनी के पास है। हालांकि कहा जा रहा है कि इस जहाज को बीते दिनों बेच दिया गया था और अब सेशेल्स की कंपनी के पास इस जहाज का स्वामित्व है। जिस जहाज पर हमला हुआ, वह ऑयल टैंकर है और रूस के प्रिमोर्स्क से भारत के वाडिनार आ रहा था।

ईरान समर्थित हूती विद्रोही इस्राइल हमास युद्ध के बाद से ही लाल सागर और अदन की खाड़ी से गुजरने वाले जहाजों को निशाना बना रहे हैं। हूती विद्रोही फलस्तीन के समर्थन में ऐसा कर रहे हैं और पहले हूती विद्रोहियों के निशाने पर इस्राइल से संबंधित जहाज ही होते थे, लेकिन बीते काफी दिनों से अन्य देशों के जहाजों को भी निशाना बनाया जा रहा है। इसके चलते कई शिपिंग कंपनियों ने अपने जहाजों को दक्षिणी अफ्रीका के लंबे रूट से भेजा जा रहा है। इससे माल की ढुलाई की लागत बढ़ गई है और वैश्विक स्तर पर महंगाई भी बढ़ी है।

अंतरराष्ट्रीय शिपिंग रूट से गुजरने वाले जहाजों को निशाना बनाने के लिए ही अमेरिका और ब्रिटेन की सेनाओं ने बीते दिनों यमन में हूती विद्रोहियों के ठिकानों पर हवाई हमले भी किए थे।

हालांकि इसके बावजूद हूती विद्रोहियों के हमले नहीं रुक रहे हैं। भारत ने भी अरब सागर और अदन की खाड़ी में अपनी नौसेना को तैनात किया हुआ है और युद्ध जहाजों से निगरानी भी बढ़ाई है।

सैन एंटोनियो पुलिस की फायरिंग में भारतीय मूल के व्यक्ति की गई जान

एंटोनियो। देश में भारतीय मूल के एक 42 साल के शख्स की पुलिस की गोली लगकर मौत हो गई। दरअसल, पुलिस एक गंभीर मामले में उसे पकड़ने की कोशिश कर रही थी, तभी उसने अधिकारियों के वाहन को टक्कर मार दी 21 अप्रैल को पुलिस अधिकारी टायलर टर्नर द्वारा सचिन साहू को गोली मारने के बाद घटनास्थल पर ही मृत घोषित कर दिया गया था। साहू मूल रूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला था।

हालांकि, सूत्रों का कहना है कि वह अमेरिकी नागरिक हो सकता है। सैन एंटोनियो पुलिस विभाग ने कहा कि शुरुआती जांच में सामने आया है कि 21 अप्रैल को शाम करीब साढ़े छह बजे अधिकारियों को घातक हथियार के साथ गंभीर हमले के बारे में एक रिपोर्ट के लिए सैन एंटोनियो के चेविओट हाइट्स में एक घर भेजा गया था। जब अधिकारी पहुंचे तो वहां एक 51 साल की महिला मिली, जिसे जानबूझकर एक वाहन से टक्कर मारी गई थी। साहू पर हमले का आरोप था। वह मौके से फरार हो गया था।

पीड़िता को गंभीर हालत में स्थानीय अस्पताल ले जाया गया। वहीं, पुलिस ने साहू के लिए एक गिरफ्तारी वारंट जारी किया। कई घंटे बीतने के बाद पड़ोसियों ने पुलिस को बताया कि साहू घर लौट आया है। सूचना पर अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे और उसे पकड़ने की कोशिश की। हालांकि, आरोपी ने भागने की कोशिश की और अपने वाहन से दो अधिकारियों को टक्कर मार दी।

रूस को उपकरण प्रदान कर रहा चीन: ब्लिंकन

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन तीन दिन के बीजिंग दौरे पर हैं। शुक्रवार को उन्होंने यूक्रेन के खिलाफ रूस के आक्रमकता को ताकत देने वाले चीनी उपकरणों के बारे में अमेरिका की गंभीर चिंताओं को दोहराया।

उन्होंने कहा कि चीन मशीन टूल्स, माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स और नाइट्रोसेल्यूलोज का शीर्ष आपूर्ति करता है, जिसका इस्तेमाल मॉस्को अपने रक्षा औद्योगिक आधार को बढ़ाने के लिए कर रहा है।

इनका इस्तेमाल गोला-बारूद और रॉकेट प्रणोदक को बनाने के लिए किया जाता है। राजधानी बीजिंग में पत्रकारों से बात करते हुए ब्लिंकन ने कहा, भले ही हम सहयोग को गहरा करने चाहते हैं। लेकिन अमेरिका चीन के द्वारा पैदा की गई चुनौतियों और भविष्य के लिए प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण को लेकर बहुत स्पष्ट है। अमेरिका हमेशा अपने मूल हितों और मूल्यों की रक्षा करेगा। उन्होंने कहा, आज की चर्चा में मैंने चीन को ऐसे उपकरण प्रदान करने के बारे में अपनी गहरी चिंता दोहराई, जो यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध की आक्रामकता को ताकत प्रदान कर रहे हैं।

चीन मशीन टूल्स, माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स, नाइट्रोसेल्यूलोज का शीर्ष आपूर्ति कर्ता है, जिसका इस्तेमाल मॉस्को अपने रक्षा औद्योगिकी आधार को बढ़ाने के लिए कर रहा है। पुतिन इस रक्षा औद्योगिक आधार का इस्तेमाल नागरिक बुनियादी ढांचे को नष्ट करने, निर्दोष बच्चों-महिलाओं और पुरुषों को मारने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं।

राजधानी बीजिंग में पत्रकारों से बात करते हुए ब्लिंकन ने कहा, भले ही हम सहयोग को गहरा करने चाहते हैं। लेकिन अमेरिका चीन के द्वारा पैदा की गई चुनौतियों और भविष्य के लिए प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण को लेकर बहुत स्पष्ट है। अमेरिका हमेशा अपने मूल हितों और मूल्यों की रक्षा करेगा। उन्होंने कहा, आज की चर्चा में मैंने चीन को ऐसे उपकरण प्रदान करने के बारे में अपनी गहरी चिंता दोहराई, जो यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध की आक्रा मकता को ताकत प्रदान कर रहे हैं। चीन मशीन टूल्स, माइक्रो इलेक्ट्रॉनिक्स, नाइट्रो सेल्यूलोज का शीर्ष आपूर्ति कर्ता है, जिसका इस्तेमाल मॉस्को अपने रक्षा औद्योगिकी आधार को बढ़ाने के लिए कर रहा है।

पुतिन इस रक्षा औद्योगिक आधार का इस्तेमाल नागरिक बुनियादी ढांचे को नष्ट करने, निर्दोष बच्चों-महिलाओं और पुरुषों को मारने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे पहले ब्लिंकन ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ बैठक की। यह बैठक ब्लिंकन की बीजिंग में चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ पांच घंटे से ज्यादा की बैठक के बाद हुई। ब्लिंकन ने चीन के सुरक्षा मंत्री वांग शियाहोंगे से भी मुलाकात की, जो देश के पुलिस प्रमुख के रूप में कार्यरत है।

सोशल मीडिया से लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई कितनी सुरक्षित

नई दिल्ली। टेक्नोलॉजी ऑन हर टर्म' शीर्षक वाली एक रिपोर्ट गुरूवार को सार्वजनिक की गई। इसमें खुलाया हुआ कि डिजिटल टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल में निहित लाभों के साथ-साथ यूजर्स की निजता का हनन होने का भी जोखिम है। साथ ही छात्र-छात्राओं का पढ़ाई-लिखाई से ध्यान भटकने और साइबर माध्यमों पर उन्हें डराए-धमकाए जाने की आशंका भी बढ़ती है।

यूनेस्को के अनुसार, सोशल मीडिया पर यूजर्स को एल्गोरिथम के आधार पर मल्टीमीडिया सामग्री के उपलब्ध कराई जाती है, लेकिन इससे लड़कियों के यौन सामग्री से लेकर ऐसे वीडियो की जद में आने का खतरा है, जिनमें अनुचित बर्ताव या शारीरिक सुंदरता के अवास्तविक मानकों का महिमांडन किया गया हो। इससे लड़कियों के लिए मानसिक तनाव बढ़ सकता है। उनके आत्म-सम्मान को ठेस पहुंच सकती है और अपने शरीर के प्रति उनकी धारणा पर नकारात्मक प्रभाव हो सकता है।

यह लड़कियों के मानसिक स्वास्थ्य व कल्याण को गहराई तक प्रभावित करता है, जोकि उनके शैक्षणिक प्रदर्शन औ करियर में सफलता पर असर डाल सकता है। यूनेस्को की महानिदेशक ऑड्री अजूले ने कहा कि बच्चों का सामाजिक जीवन, काफी हद तक सोशल मीडिया में परिलक्षित हो रहा है।

वियतनाम के संसद प्रमुख का इस्तीफा

वियतनाम। देश में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान के बीच राष्ट्र की संसद के प्रमुख वुओंग दीन्ह ह्यू ने इस्तीफा दे दिया है। रिपोर्ट के अनुसार 21 अप्रैल को व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने पद और शक्ति का दुरुपयोग करने के आरोप में उनके सहायक फाम थाई हा को गिरफ्तार किया गया था। इसके कुछ दिनों बाद संसद प्रमुख वुओंग दीन्ह ह्यू ने भी इस्तीफा दे दिया है।

वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी ने ह्यू के स्वैच्छिक इस्तीफे को स्वीकार कर लिया। हालांकि, शुरुआती रिपोर्ट्स में यह नहीं कहा गया कि उन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया गया था।

लेकिन जांचकर्ताओं ने पाया कि ह्यू ने पार्टी के नियमों का उल्लंघन किया था, और इस वजह से पार्टी, राज्य और उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने कहा है कि संयुक्त राज्य अमेरिका एक सुरक्षित देश है और यह भारतीय छात्रों की भलाई की परवाह करता है।

उन्होंने अमेरिका में पढ़ रहे भारतीय छात्रों के माता-पिता को आश्वासन दिया कि जब तक वे अमेरिका में है, तो उनके बच्चे हमारे बच्चे हैं। गार्सेटी ने यह जवाब उस सवाल के जवाब में दिया, जिसमें पूछा गया था कि जनवरी से अब तक अमेरिका में भारतीय मूल के आधा दर्जन छात्रों की मौत हो चुकी है। इसके जवाब में गार्सेटी ने कहा कि हम अमेरिका में भारतीय छात्रों की भलाई की परवाह करते हैं।

उन्होंने कहा कि अमेरिका में अनेक संसाधन मौजूद हैं, जो छात्रों को तैयारी करने में मदद कर सकते हैं। श्रीलंकाई सरकार के प्रवक्ता ने कहाहै कि भारत और रूस की कंपनियां हंबनटोटा में मटाला राजपक्षे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के प्रबंधन की जिम्मेदारी संभालेंगी। बता दें कि कि इस इंटरनेशनल एयरपोर्ट को दुनिया का सबसे खाली हवाई अड्डा करार दिया गया था। अब सरकार के प्रवक्ता बंडुला गनवार्डेना ने कहा कि 9 जनवरी को श्रीलंकाई कैबिनेट की बैठक हुई।

देश में भारी बारिश के कारण 155 की मौत

तंजानिया। देश में पिछले कुछ हफ्तों में भारी बारिश के कारण बाढ़ आ गई। बाढ़ और भूस्खलन के कारण अबतक 155 लोगों की जान चली गई। भारी बारिश के कारण मौजूदा स्थिति को देखते हुए तंजानिया के प्रधानमंत्री कासिम मजालिवा ने इसके लिए अल नीनो जलवायु पैटर्न को जिम्मेदार ठहराया है। तंजानिया में भारी बारिश के कारण सड़कों, ब्रिज और रेलरोड को काफी नुकसान पहुंचा है।

पीएम मजालिवा ने कहा आंधी-तूफान के साथ भारी अल नीनो बारिश के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में बाढ़ और भूस्खलन की स्थिति पैदा हो गई है। इससे काफी क्षति पहुंची है। उन्होंने बारिश के विनाशकालीन प्रभाव के लिए अस्थिर खेती के तरीके को जिम्मेदार ठहराया है।

रूस के खिलाफ मजबूत होगा यूक्रेन

वाशिंगटन। अमेरिका ने यूक्रेन को सबसे बड़ी सैन्य मदद देने का एलान किया है। इसके तहत अमेरिका यूक्रेन को 6 अरब डॉलर की सैन्य मदद देगा, जिससे यूक्रेन हथियारों की खरीद करेगा, जिनमें पैट्रियट इंटरसेप्टर्स और एयर डिफेंस सिस्टम शामिल है। नकी मदद से यूक्रेन को रूस के हवाई हमलों से बचने में काफी मदद मिलेगी।

यूक्रेन की तरफ से लंबे समय से पैट्रियट मिसाइल सिस्टम देने की मांग की जा रही थी। अमेरिका के रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने शनिवार को यूक्रेन को सैन्य मदद देने का एलान किया।

यह मदद यूक्रेन सिक्योरिटी असिस्टेंस इनीशिएटि के तहत दी गई है, जिसकी मदद से यूक्रेन अमेरिकी कंपनियों से नए हथियारों का अधिग्रहण करेगा। पेंटागन में एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए ऑस्टिन ने कहा कि यह अब तक का सबसे बड़ी सैन्य मदद है और यूक्रेन को हथियारों की सप्लाई जल्द की जाएगी।

इस सैन्य मदद के तहत यूक्रेन को अमेरिका से ड्रोन्स से निपटने वाला सिस्टम, आधुनिक हथियार और हवा से जमीन पर मार करने वाले हथियार मिलेंगे। अमेरिका ने यूक्रेन को 60 अरब डॉलर का सहायता पैकेज देने का एलान किया था। यह 6 अरब डॉलर की सैन्य मदद भी उसी पैकेज का हिस्सा है।

इस मदद से यूक्रेन को रूस के खिलाफ लड़ाई में मदद मिलेगी। खासकर यूक्रेन को अमेरिका से एयर डिफेंस सिस्टम के तहत पैट्रियट मिसाइलें और छौ।डै एयर डिफेंस सिस्टम भी मिलेगा। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने अमेरिकी की सैन्य मदद पर खुशी जताई लेकिन ये भी कहा कि अभी उन्हें और एयर डिफेंस सिस्टम की जरूरत है, जिससे रूस के हवाई हमलों से निपटा जा सके।

ऑस्टिन ने कहा कि अमेरिका और सहयोगी देशों ने बीते दो वर्षों में यूक्रेन को 70 मध्य से लंबी दूरी वाले एयर डिफेंस सिस्टम, हजारों मिसाइलें, 3000 बख्तरबंद वाहन साथ ही 800 टैंक, 10 हजार एंटी टैंक मिसाइलें दी गई हैं। साथ ही जल्द ही यूक्रेन को एफ-16 फाइटर जेट भी मिलेंगे। अमेरिका के रक्षा मंत्री ने यूक्रेन को सैन्य मदद देने पर कहा कि अगर यूक्रेन पर पुतिन का कब्जा हुआ तो फिर पूरे यूरोप पर पुतिन का असर दिखेगा।

विरोध प्रदर्शन के लिए भारतीय मूल की छात्रा भी गिरफ्तार

इजरायल। हमास और इस्राइल बीते छह महीने से जंग लड़ रहे हैं। इस्राइल द्वारा हमास को खत्म करने का संकल्प गाजा पट्टी के लोगों पर भारी पड़ रहा है। गाजा में पैदा हुई मानवीय परिस्थितियों को लेकर अमेरिका में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। कई विश्वविद्यालय के छात्र इस्राइल के खिलाफविरोध- प्रदर्शन कर रहे हैं।

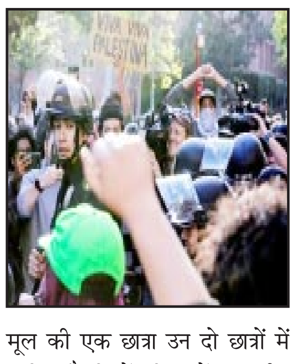

बिगड़ते माहौल को देखते हुए कई छात्रों को गिरफ्तार कर लिया गया था। इन गिरफ्तार लोगों में एक भारतीय मूल की छात्रा भी है। प्रिंसटन विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली भारतीय मूल की एक छात्रा उन दो छात्रों में शामिल है, जिन्हें परिसर में फलस्तीन के समर्थन में प्रदर्शन करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया और परिसर से बाहर जाने से रोक दिया गया।

विश्वविद्यालय के एक प्रवक्ता ने बताया कि तमिलनाडू के कोयंबटूर में जन्मी और कोलंबस में पली-बढ़ी अचिंत्या शिवलिंगन के विश्व विद्यालय परिसर में आने पर रोक लगाने का फैसला लिया है। साथ ही उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने का निर्णय लिया।

प्रिंसटन एलुमनी वीकली ने एक रिपोर्ट में बताया कि प्रदर्शनकारियों ने गुरुवार सुबह लगभग सात बजे मैककोश कोर्टयार्ड में फलस्तीनियों के समर्थन के लिए टेंट लगाए थे। गिरफ्तार कर लिया गया था।

व्यापार करने वाली कंपनियों पर प्रतिबंध

वाशिंगटन। अमेरिका ने ईरानी सेना के साथ अवैध व्यापार और ड्रोन हस्तांतरण करने के आरोप में एक दर्जन से ज्यादा कंपनियों, व्यक्तियों और जहाजों पर प्रतिबंध लगाया है। इनमें तीन भारत की कंपनियां भी शामिल हैं।

अमेरिकी वित्त विभाग ने कहा कि इन कंपनियों, व्यक्तियों और जहाजों ने यूक्रेन में रूस के युद्ध के लिए ईरानी ड्रोन की गोपनीय बिक्री को सुविधाजनक बनाने और वित्तपोषण करने में एक केंद्रीय भूमिका निभाई है। सहारा थंडर ईरान की पहचान मुख्य अग्रणी कंपनी के रूप में की गई है।

ताइवान में महसूस किए गए भूकंप के झटके

ताइवान। देश में भूकंप के झटके महसूस किए गए हैं। द्वीप देश के मौसम विभाग के मुताबिक, शनिवार को ताइवान के पूर्वी काउंटी हुलिएन के पास आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.1 आंकी गई है।

वहां के प्रशासन ने बताया है कि भूकंप के झटकों से राजधानी ताइपे की कई इमारतें हिल गईं। हालांकि नुकसान की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। मौसम विभाग ने बताया कि भूकंप का केंद्र 24.9 किमी गहराई में था। इससे पहले, इस महीने की शुरुआत में हुलिएन में आए 7.2 तीव्रता का भूकंप आया था, उसमें 17 लोगों की मौत हो गई थी। तब से यहां 1,000 से अधिक झटके आ चुके हैं।

पृथ्वी के अंदर 7 प्लेट्स हैं, जो लगातार घूमती रहती हैं। जहां ये प्लेट्स ज्यादा टकराती हैं, वह जोन फॉल्ट लाइन कहलाता है। बार-बार टकराने से प्लेट्स के कोने मुड़ते हैं। जब ज्यादा दबाव बनता है तो प्लेट्स टूटने लगती हैं। नीचे की ऊर्जा बाहर आने का रास्ता खोजती हैं और डिस्टर्बेंस के बाद भूकंप आता है। भूकंप का केंद्र उस स्थान को कहते हैं जिसके ठीक नीचे प्लेटों में हलचल से भूगर्भीय ऊर्जा निकलती है। इस स्थान पर भूकंप का कंपन ज्यादा होता है। कंपन की आवृत्ति ज्यों-ज्यों दूर होती जाती हैं, इसका प्रभाव कम होता जाता है।

फिर भी यदि रिक्टर स्केल पर 7 या इससे अधिक की तीव्रता वाला भूकंप है तो आसपास के 40 किमी के दायरे में झटका तेज होता है। लेकिन यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि भूकंपीय आवृत्ति ऊपर की तरफ है या दायरे में।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक अजरा परवीन द्वारा वेदवीर प्रिन्टर्स, विद्यापीठ पुरम् सिविल लाइन, बदायूं से मुद्रित एवं कार्यालय अमर भास्कर निकट रीजेन्सी होटल लावेला चौक, बदायूं (उ.प्र.) से प्रकाशित। **संपादक: अबरार अहमद** (इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन हेतु पी.आर.बी. की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी)। समस्त विवाद बदायूं न्यायालय के अधीन होगें। मोबाइल नं. 9411214614, ई-मेल: amarbhashkar21@gmail.com, RNI No.:- UPHIN/2021/82941